संस्कार पद्धति

(भार्गव समाज में प्रचलित संस्कारों के आधार पर)

हमारे आराध्य

महर्षि भृगु

महर्षि च्यवन

भगवान परशुराम

श्रीमती शान्ति देवी भार्गव

(माता जी)

श्री केदारनाथ भार्गव

(पिता जी)

श्रीमती मधु भार्गव

(धर्मपत्नी)

को सादर समर्पित

संस्कार पद्धति

(भार्गव समाज में प्रचलित संस्कारों के आधार पर)

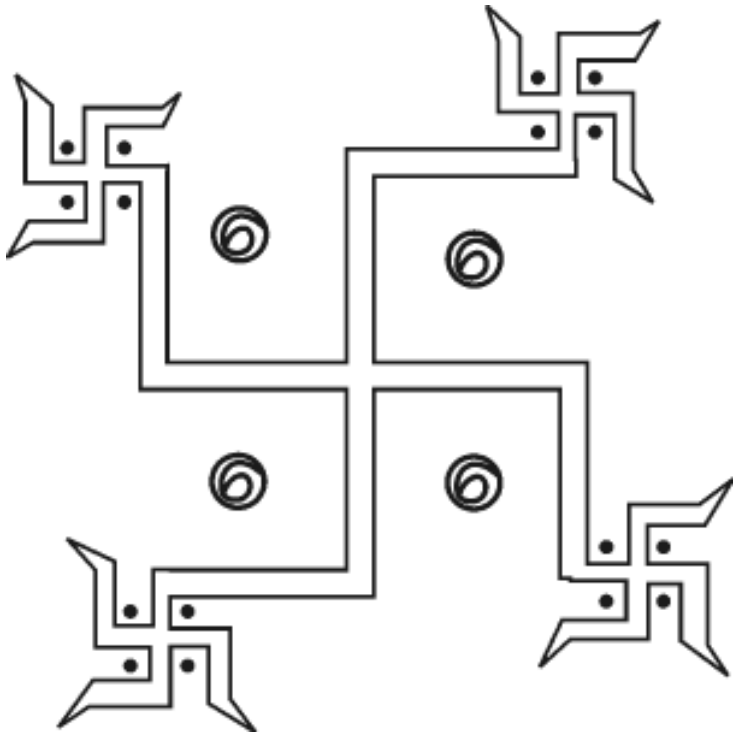

लेखक :

योगेश भार्गव

प्रकाशक एवं मुद्रक :
मीनाक्षी कॉम्प.स्टेशनर्स
वी-182/3, अरविन्द नगर, घौंडा, दिल्ली-110053
दूरभाष : 9312243182

प्रथम संस्करण : जनवरी 2019

निःशुल्क

प्राप्ति स्थान :
संजीव भार्गव
वी-182/3, अरविन्द नगर, घौंडा, दिल्ली-110053
दूरभाष : 9136229066

मयंक भार्गव
ए-1/24, डी.एल.एफ. भोपुरा, दिलशाद एक्सटेंशन-2,
साहिबाबाद, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष : 9718011810, 9312243182

शब्द संयोजन : विमला पाण्डेय (9540239634, 9718532752)

आवरण पृष्ठ, डिजाइन एवं प्रिंटिंग : रवि कुमार (9811690254)

प्रस्तावना

सर्वप्रथम हमें समझना चाहिये कि संस्कार शब्द का तात्पर्य क्या है? वास्तव में संस्कार शब्द बहुत विस्तृत है। जैसे अपने को मानसिक व शारीरिक रूप से शुद्ध करना, उत्तम आचार-विचार, उत्तम गुणों को ग्रहण करना, पापों को दूर भगाना, जीवन को शुद्ध कर्मों से सुशोभित करना, किसी से गलत व दुर्व्यवहार न करना आदि। जिस प्रकार हीरा खदानों में ऊबड़-खाबड़ स्थिति में दबा पड़ा रहता है, किन्तु विशेष प्रकार के कारीगरों द्वारा उसे तराश व शुद्ध कर उसकी गुणवत्ता व सौन्दर्य बढ़ा कर मूल्यवान बनाया जाता है। ठीक उसी प्रकार मानव जीवन को संस्कार रूपी 'विशेष कारीगर' सुखमय बना देता है। जब कोई नवीन आधुनिक मशीन खरीदता है तो उसे चालू करने के लिये एक निर्देशिका साथ में दी जाती है और तदानुसार उसको चला कर संचालित करते हैं। निर्देशिका के अनुसार न चलाने पर मशीन खराब हो जाती है ठीक उसी प्रकार ईश्वर/बुद्धिजीवी ने मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिये संस्कार रूपी निर्देशिका दी है ताकि जीवन को बिना किसी बाधा के शान्तिमय व सुखमय बना कर आगे बढ़ा जा सके।

संस्कारों से जीवन के नाना प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति होती है और मनुष्य इनका पालन करते हुये आगे बढ़ता है। संस्कार व्यक्ति पर सामाजिक नियमों का पालन करने के लिये मनोवैज्ञानिक दबाब डालते हैं। संस्कारों की कुल संख्या 16 है। ये संस्कार निम्नलिखित हैं–

1. गर्भाधान, 2. पंचवासा, 3. अगनूं, 4. बच्चे के जन्म के समय, 5. नामकरण, 6. चन्द्रमा दर्शन, 7. अन्नप्राशन, 8. मुण्डन, 9. कर्णभेद, 10. पट्टी पूजन, 11. जनेऊ, 12. विवाह, 13. गृहस्थ, 14, वानप्रस्थ, 15. संन्यास, 16 अन्त्येष्टि। वर्तमान समय में इनमें कुछ संस्कार लुप्त हो चुके हैं।

मेरे परिवार के बच्चे हमेशा मुझसे कहते थे कि आप हमारे परिवार में जो कुछ संस्कार प्रचलित हैं उन्हें एक पुस्तक रूप में समेट दें ताकि भविष्य में हम उनका अनुपालन कर सकें। उन्हीं की प्रेरणा से मैंने यह पुस्तक लिखी। इस पुस्तक को लिखने में मुझे श्रीमती मंजू भार्गव, श्रीमती अलका भार्गव एवं श्री संजीव भार्गव का सहयोग प्राप्त हुआ।

आशा है पाठकवृन्द व पारिवारिक सदस्य इस पुस्तक का उपयोग कर लाभान्वित होंगे। सुझावों व संशोधन हेतु आप सभी से सुझाव आमंत्रित हैं।

योगेश भार्गव

लेखक श्री योगेश भार्गव, संपादक, भार्गव समाचार दर्शिका, दिल्ली ने भार्गव समाज में प्रचलित संस्कारों के आधार पर प्रस्तुत संकलन को अपनी संक्षिप्त शब्दावली के माध्यम से संजोकर व समयानुसार संशोधन कर पुस्तक को नवीन रूप देने का सराहनीय प्रयास किया है।

मेरा विश्वास है कि पाठकगण लाभान्वित होंगे।

संतोष-बालकृष्ण भार्गव

193-डी, डीडीए फ्लैट्स, राजौरी गार्डन,
नई दिल्ली-110027
दूरभाष : 09891910968

अनुक्रमणिका

जन्म

पुंसवन (पंचवासा) 7
मेवाशीरनी 7
बालक के जन्म के समय के जातकर्म संस्कार 7
छठी 8
अगनूं संस्कार 9
कुआँ पूजन 10
मुंडन 11
श्लोक व मंत्र 12

विवाह संस्कार

सगाई/अंगूठी भेजना 13
वैवाहिक कार्यक्रम 13
छठी 13
अंगूठी पहनाना 13
लेना-देना 13
बोर चोटी गूंधना या सगाई पहनाना 14
सगाई की विदाई 14
देव स्थापना 14
पूजन की थाली 14
कन्या पक्ष द्वारा लग्न लिखाना 15
वर पक्ष द्वारा लग्न लेना 15
हल्द हाथ 15
पाँवड़े बनाना 16
कोठियार 16
देव-पूजन तथा रतजगा 16
तेलताई 17
कांकण बांधना 17
ब्रह्मा पूजन (चाक पूजन) 18
बूढ़ा बाबा पूजना 18
भात 18
भात पहरना 18
मंडप-रोपन 19
बाली पहनाना 19
फोकण्डी 19
घुड़चढ़ी के लिए तैयार सामान की सूची 19
घुड़चढ़ी 20
बरी में भेजने का सामान 20

स्वागत बारात 20
वर माला 21
सम्प्रदान 21
विवाह 21
बरी पहनाना 21
जूता चुराई 21
विदा के समय का सामान 22
बर्तन 22
तीयल 22
बारात वापस आने पर वर पक्ष के यहाँ की रस्में 23
वार रुकाई 23
देवपूजन 23
कांकण खोलना 24
बायना खोलना 24

मनुष्य-जीवन का अन्तिम संस्कार (अन्त्येष्टि)

मरणकाल का ज्ञान होने पर 25
प्राण निकलने के पश्चात् 25
दाह कर्म26
सामान की सूची 26
अर्थी 26
पिण्ड दान 28
पैर पूजना 28
क्रियाकर्म करके लौटते वक्त 29
अस्थि संचय 30
घट बाँधना 30
उठावनी 30
अस्थि विसर्जन 31
नौनहाना 31
दसवां या ग्यारहवां 31
दसवें पर दान का सामान 31
पूजन के लिए सामान 32
बारहवां या तेरहवीं 32
बारह ब्राह्मणों के लिए 32
शय्यादान के लिए सामान 33
भले-बुरे की रस्म 33
पगड़ी बाँधना 33
स्त्री द्वारा आँट खोलना 34
बरसी 34
बरसी पर सामान 35
संत चरणदास की 108 नाम की माला 36

जन्म

पुंसवन (पचवांसा)

बहू के गर्भधारण का निश्चय हो जाने पर यह संस्कार किया जाता है। गर्भ निर्धारित होने के पाँचवें माह (पाँच माह समाप्त होने से पूर्व) इसे करना चाहिए। किसी कारणवश यदि पाँचवें माह तक न कर सकें तो सातवें माह में कर लेना चाहिए। गर्भधारण के शुभ संदेश को गर्भवती के मायके तथा ननद के घर भेजना चाहिए। ननद व मायके दोनों के यहाँ से दो थैलियों में लड्डू-मेवा व अन्य सामान रखकर आता है। यह कार्य अमावस के बाद आने वाली दोयज (चौथ, छठ व नवमी नहीं होनी चाहिये) को करना चाहिए।

मेवाशीरनी

एक सफेद कपड़े की थैली में सवा सेर नुकती के लड्डू , 5 कलावा, मेंहदी, बिन्दी, चूड़ी के पैसे और चीर सुपारी **(एक गुलाबी कपड़े में 5 सुपारी तथा हल्दी से पीले करके चावल के दाने को 'चीर सुपारी' कहते हैं)** रखे जाते हैं। थैली का ऊपरी भाग पीला करके रंगीन धागे से सी दिया जाता है। इसे **'मेवाशीरनी संजोना'** कहते हैं। दूसरी थैली, जिसका ऊपरी हिस्सा सफेद हो तथा नीचे का हिस्सा लाल कर दिया गया हो, में लगभग 500 ग्राम मेवा (पाँच प्रकार की), 2 गोले, मेंहदी, डोरा, बिन्दी, चूड़ी के पैसे, एक लाल कपड़े में 5 सुपारी तथा पीले रँगे चावल बाँधकर, थैली में रखकर थैली को रंगीन (लाल/पीले) धागे से सी दिया जाता है। ये दोनों थैलियाँ पचवांसा के दिन से एक दिन पूर्व आ जानी चाहिए।

प्रातः बहू को सिर सहित स्नान कराके, नया रंगीन कपड़ा पहनायें उसके हाथ में मेंहदी लगाई जाये। पट्टे पर पूरब की ओर मुँह करके बहू को खड़ा करें। बहू की गोद में भीगे हुए चनों को, किसी सौभाग्यवती स्त्री से जिसकी सब संतान चिरंजीव व स्वस्थ हों, आँदला (दोनों हाथ भरकर) भरकर डलवाये जायें। कहीं-कहीं आटे के कच्चे फल भी साथ में दिये जाते हैं। इस रस्म को **'अछूती छोल डालना'** कहते हैं। अछूती छोल के चने बहू को खाने चाहियें। गर्भवती से बेसन की पकोड़ी बनवायें। खाने में हलवा पूरी बनता है। दो सुहागन एवं दो बरुटे जिमाए जाये।

शाम को मेवाशीरनी खोलने का कार्य अमावस के बाद आने वाली दोयज (चौथ, छठ, नवमी नहीं होनी चाहिए) को करना चाहिए। इस दिन मायके से आई हुई थैलियों में से थोड़ा देवताओं के निमित्त अछूता निकालकर लड्डू व मेवा बहू की गोद में पांच सुहागनों द्वारा दे दिये जायें। ननद के घर वाली थैलियों में से मेवा व लड्डू निकाल कर बहू की गोद में दिये जायें। इसमें से अछूता नहीं निकालते। मेवा व लड्डू परिवारजनों को बाटते हैं।

बालक के जन्म के समय के जातकर्म संस्कार

कन्या उत्पन्न हो या पुत्र उनके जन्म लेते ही उसे शुद्ध करने के लिए शरीर में तेल लगाकर, मलमल के पुराने कपड़े से पोंछकर, गर्म जल से स्नान कराया जाये। शहद तथा गाय के घी को उँगली में लगाकर उसका मुख शुद्ध करें। जो राल मुख में हो उसे साफ कर दें। बच्चे को साफ धुले शुद्ध कपड़े में लपेटकर नरम बिछौने पर लिटा दें। फूलों से भरी थाली बजाई जाये। जच्चा की यथोचित सेवा करके लिटा दिया जाये।

छठी

जच्चा का स्नान तथा छठी-पूजन–जब बच्चा 5, 6 अथवा 7 दिन का हो जाये, तब शुभ दिन (रविवार, मंगलवार या बृहस्पतिवार शुभ दिन होते हैं) देखकर जच्चा और बच्चा को उबटन लगाकर गर्म पानी से स्नान कराया जाये। उनके कपड़े, बिस्तर आदि बदल दिये जाते हैं।

छठी पूजन–शाम को 4 बजे के लगभग घर में पूर्व या पश्चिम की दीवार पर **'बे'** का चित्र लगाया जाता है। कुछ जौ या गेहूँ के दाने उस आकृति के समीप डाल दें। नवजात बच्चे को बुआ के घर से आये नये कपड़े, जो लाल या गुलाबी रंग के हों, पहनाये जायें। कमर में काले डोरे की बनी करधनी, हाथ में काले डोरे की बनी पोंहची तथा गले व पैर में भी काले डोरे से बनी डोरी पहनावें। सिर पर टोपी पहनाई जाये। यह सब वस्त्रादि व साबुत गोला बुआ के यहाँ का होता है। इसे **छटूलनी** कहते हैं।

बच्चे की छठी पर 'बे'

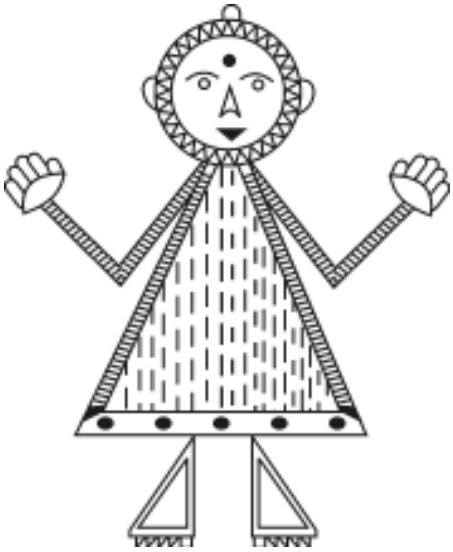

सवा गज कपड़े के चारों कोने पीले कर बीच में साथिया बनाकर बच्चे का पोतड़ा तैयार करें। जच्चा को रंगीन साड़ी पहनाकर चौक लगाकर पट्टा पर बैठाया जाये। जच्चा बच्चे को गोद में लेकर **'बे'** की पूजा जल, रोली, हल्दी व अक्षत से करे। एक रुपया भेंट चढ़ावे तथा एक दियाली में दिया जलाया जाये। गुड़ व तेल चढ़ावे। चार रोटी, शक्कर व चावल (इस पर उल्टा तवा रखकर) का भोग लगावे। पैसा पीला करके चढ़ावे। कच्चे आटे की 14 पूरी और 11 रुपये एक कटोरी में रखकर बायना काढ़कर ननद को दें। देवी जी से बच्चे की दीर्घायु की वंदना करके पट्टे से उठकर बाहर आकर उनसे सूर्य-पूजा कराई जाये। सूर्य की तरफ मुँह करके अर्घ्य दे और फिर घर में वापिस चली जाये।

बच्चे की छठी पर 'बे'–यदि लड़का हुआ है तो घर के दरवाजे के बाहर वाली दोनों दीवारों पर ननद दाहिनी ओर **'साथिया'** और बाईं ओर **'छावड़ी'** रखती है। ये आकृतियाँ विष्णु व लक्ष्मी के प्रतीक रूप में बनती हैं जिससे हमारे नवजात पुत्र की ये देवता रक्षा करें। सूर्य-पूजा करके लौटते समय जच्चा साथिया पूजती है। साथिया में रुपये और छावड़ी में ताँबे के पैसे चिपकाये जाते हैं। ननद को सोने की अँगूठी व साड़ी दी जाती है। साथिये के पास मूँग चावल रखा जाता है, यह भी ननद को दिया जाता है। साथिये रखने से पूर्व ननद को तिल चावली दी जाती है। जो स्त्रियाँ आयी हों उन्हें तथा बहू के पीहर वालों को भी तिल चावली दी जाती है। छावड़ी की पूजा भी रोली के छींटें व अक्षत से की जाती है। देवी जी के पास जो दीपक जलाया था उसकी लौ में फूल या चाँदी के कटोरे में काजल बनाकर बुआ बच्चे की आँख में लगावे। कटोरा बुआ को मिलता है। देवी-देवताओं की वन्दना के गीत गाये जाते हैं। उपस्थित महिलाओं का जलपान से स्वागत किया जाये। छठी के दिन, दिन में अथवा रात्रि में, जब सुविधा हो मंगल-गान किया जाये।

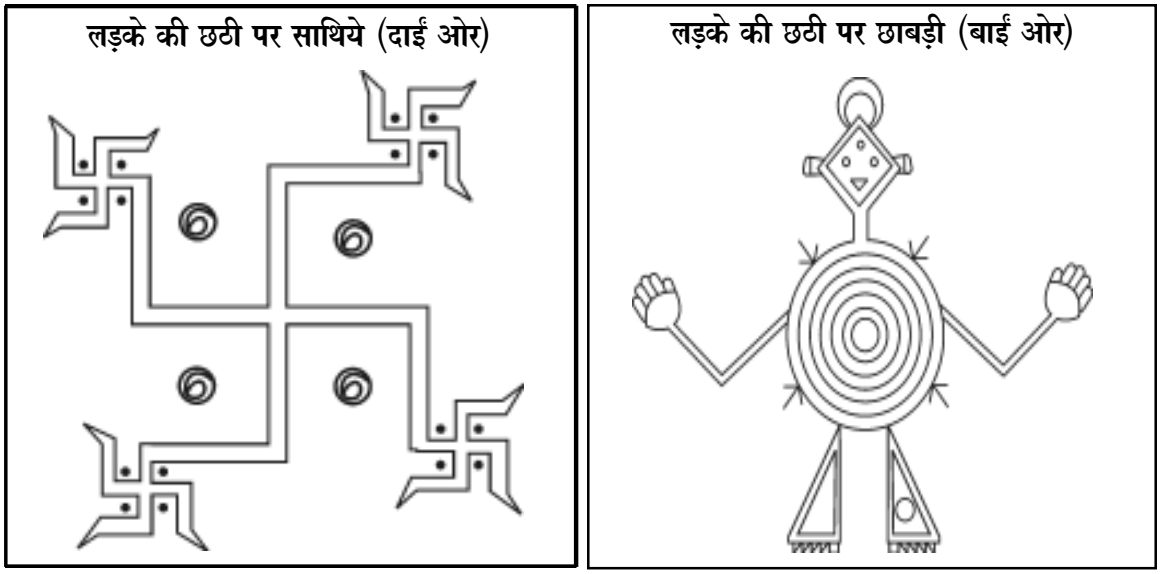

साथिये (दाई ओर) एवं छाबड़ी (बाई ओर)

नहान–पहले नहान के 4-5 दिन बाद दूसरा नहान होता है। उसके 4-5 दिन बाद तीसरा नहान होता है। उसके 4-5 दिन बाद चौथा नहान होता है। सब नहान पर कच्चे आटे के फल बनाकर काढ़े जाते हैं।

अगनूं संस्कार

अगनूं वरजना–अगनूं संस्कार का नाम सीमन्तोन्नयन संस्कार भी है। शुभ दिन देखकर बहू को सिर सहित स्नान करावें। बहू को पट्टे पर खड़ा करके उसकी गोद में भीगे चने किसी सौभाग्यवती स्त्री, जिसकी सब संतान चिरंजीव व स्वस्थ हों, के द्वारा **'चीर सुपारी'** सहित डलवायें। इसे **'अगनूं वरजना'** कहते हैं। इस दिन देवताओं की वन्दना के गीत गाये जाते हैं। किसी पंडित से गणेश-पूजन कराकर बहू के मायके वालों को इस शुभ रस्म की तिथि-सूचना की चिट्ठी भेजी जाती है। इसे **भात की चिट्ठी** कहते हैं। अगनूं वरजने के आठवें या पंद्रहवें दिन अगनूं पहराई जाती है।

अगनूं पहराना–अगनूं के पहले वाली रात को तारे निकलने के बाद देवपूजा की जाती है। देवस्थान को धोकर, पूर्व या पश्चिम की दीवार के एक हाथ लम्बे व एक हाथ चौड़े स्थान को साफ कर लेते हैं। फिर गेरू से उस स्थान को लीपना चाहिए। सूख जाने पर इस पर मैदा व हल्दी मिले पतले घोल से **'रात'** रखी जाती है। इसे ननद रखती है। **(आजकल बनी हुई रात के चित्र बाजार में मिलते हैं)।**

'रात' रखने के बाद एक कढ़ाई (बिना कुंडे की) में तेल लेकर दीया जलाया जाता है। एक जोड़ा कलावा, तथा दो इंच लम्बे-चौड़े चौकोर कपड़े में पैसे व सुपारी रखकर 'रात' पर चिपका देते हैं। पूजन के समय एक कुल्हड़ में मूँग, एक कुल्हड़ में चावल भरकर रखा जाता है। एक तीयल, गुड़, घी व आटा देवताओं के लिए रखा जाता है। कुछ रुपये भी होते हैं जो हर परिवार में अलग-अलग संख्या में रखने की प्रथा है। अगनूं में साढ़े चार किलो मैदा के 100 पाँवड़े बनाये जाते हैं। रात की पूजा करते समय 50 पाँवड़े व अगनूं पहनते समय 50 पाँवड़े रखे जाते हैं। रतजगा कर मंगल गान होता है। सवेरा होने पर दिन में 4 सुहागिनों और 2 बटुकों को भोजन कराया जाता है फिर सब कुटुम्बी भोजन करते हैं।

दोपहर बाद आँगन में चौक लगाकर दो पट्टे बिछाये जाते हैं। स्त्री व पति दोनों को पट्टे पर खड़ा करके मायके से आया हुआ भात पहनाया जाता है। भात में सास-ससुर का जोड़ा व तीयल, दामाद का जोड़ा, बेटी की चूंदड़ी व तीयल, आभूषण तथा सब रिश्तेदारों के तिलक किये जाते हैं। इसके अलावा साध का एक ब्लाउज़ पीस होता है। एक गोद होती है जिसमे 250 ग्राम मेवा व एक गोला होता है। बहू का भाई चूंदड़ी ओढ़ाता और बहनोई के तिलक करता है। बहन भाई की आरता उतार कर उसके माथे पर तिलक करके उन्हें रुपये देती है और अपनी भावज की गोदी में भी रुपये देती है। भाई आरते की थाली में रुपये डालता है। यह सब कार्य हो चुकने के बाद बहू तथा उसका पति देवस्थान में जाकर देवी को प्रणाम करते हैं। ननद द्वारा वार रुकाई होती है। बहू सब पूज्य स्त्रियों को पैरों-पड़ाई देती है। इसके बाद मंगलगान होता है। सबको भोजन कराया जाता है। भावजों को भात की विदा में सवा किलो सकरपारे की एक कोथली दी जाती है। उनकी वापसी के समय उनके लिए ब्लाउज के कपड़े भी देते हैं। जितने भाई-भतीजे हों उनका तिलक दिया जाता है।

साध जिमाना—ननद भाई-भावज को अपने घर बुलाकर अनेक प्रकार के, खट्टे-मीठे, तीखे, चटपटे व्यंजन बनाकर उसे खिलाती है। खाने के बाद पान-सुपारी से सत्कार करके भाई के रोली से तिलक कर रुपये देती है, तथा भावज को रुपये व एक ब्लाउज पीस देती है। इसे **'साध जिमाना'** कहते हैं।

कुआँ पूजन

कुआँ पूजन तीसरे नहान को करना चाहिये जब बच्चा कम-से-कम 21 दिन का हो जाये।

मूल-शान्ति—यदि बच्चा मूल नक्षत्र में पैदा हुआ हो, तो उसी नक्षत्र के आने पर मूल शान्ति भी करवायें और तभी कुआँ पूजन भी करें। कुँआ पूजन के समय खाँड़ के नाम से सामान भेजा जाता है। उसमें पीलिये की एक साड़ी, एक तीयल, बच्चे के कपड़े व कुछ आभूषण, खिलौने, एक साबुत गोला व 250 ग्राम शक्कर भेजी जाये। मूल शान्ति अगर होती है तो दामाद का जोड़ा व लड़की के लिये तीयल भेजी जाती है।

इस दिन जच्चा-बच्चा को उबटन लगाकर गर्म पानी से नहलाया जाये। कपड़े पहनाकर देवी की मूर्ति के पास पट्टे पर जच्चा को बैठाया जाये। एक कटोरी में कच्चे आटे की 14 पूड़ी तथा रुपये रखकर हल्दी, चावल, व पानी से बायना काढ़कर ननद को दें। हवन व देव-पूजन, नवग्रहपूजन आदि पति-पत्नी, दोनों बैठकर, बच्चे को गोद में लेकर करें। हवन के बाद चार सुहागिन, दो बटुक और कम-से-कम दो ब्राह्मण खिलाये जायें। इसके बाद जच्चा व कुटुम्ब-परिवार वाले भोजन करें।

शाम को चार बजे के लगभग पीहर से आयी सुही (पीली साड़ी) ओढ़ा कर जच्चा की गोद में खसखस व चावल देना चाहिए। इसी से वरुण की पूजा होती है। घर के बाहर जो साथिये लगाये गये थे उनको उखाड़ लें। फिर उन्हें सूप या थाली में रखकर, यदि कुआँ पर जाकर पूजा की जाये, तो उसमें डाल दें। कुआँ के चारों ओर साथिया बनाकर बहू उस पर कुछ पैसे चढ़ाती है। ये पैसे घर की नौकरानी लेती है। घर में ही कुआँ-पूजन की रस्म यदि करनी हो तो मिट्टी के एक कूँड़े पर घड़ा रक्खें या हाँडी रक्खें। एक ढकने से उसे ढक दें। सबमें हल्दी लगाकर कलावा बाँधा जाता है। जच्चा उसकी पूजा करती है। सुहागिन महरी या किसी अन्य स्त्री से घड़े में जल भरवाकर कूँड़ा-करुआ पूजन करते हैं। घड़े का पानी व साथिया घर की नौकरानी कुआँ में डाल आवे और कुआँ पर साथिया हल्दी से बना दे। बाहर कुआँ पूजने जाते समय बच्चे के पास उसका बाबा बैठता है। लौटकर आने

पर जच्चा ससुर को भेंटस्वरूप कुछ देती है और ससुर आशीर्वाद देता है। उपस्थित मान्य महिलाओं को पैरों-पड़ाई पैर छूकर दी जाती है। कुआँ-पूजन करके लौटकर आने पर पांच लड़कों को जच्चा भीगे हुए चने दे। बच्चे स्वस्थ व ऊँचे वर्ण के होने चाहिए। मंगल गान होता है। उपस्थित अतिथियों का जलपान या भोजन कराकर स्वागत किया जाये। कुआँ पूजन के बाद पीलिये की साड़ी पहनकर ही खाँड़ काढ़ने की प्रथा है। यह खाँड़ (शक्कर) दो-तीन घरों में दी जाती है। (**आजकल अगनूं संस्कार बच्चे के होने के बाद कुआँ पूजन के दिन करते हैं।**)

मुंडन

6 महीने से पूर्व मुंडन नहीं होता है क्योंकि उस समय तक बच्चे के मस्तिष्क का भाग बहुत ही सुकोमल होता है। सातवें या ग्यारहवें महीने में मुंडन संस्कार करना चाहिए। बुआ बच्चे को गोद में लेकर नाई से बाल कटवाये। बाल कैंची से काटे जायें। उतरे हुए बालों को लाल कपड़े में बाँधकर रख दें। नाई को चावल, गुड़ और रुपये दिये जायें। ननद को घी-गुड़ दिया जाये। कटे हुए बाल देवालय के पीछे या नदी में डाल दिये जायें। नदी में डालने हों, तो आटे की लोई में बाल लपेटकर डाले जायें। मुण्डन के बाद बालक को स्नान करावें तथा नये स्वच्छ वस्त्र पहनावें। मुण्डन किये सिर पर स्वास्तिक चन्दन या रोली से बना दें। यह कार्य किसी बुजुर्ग से कराया जाये। (**शुक्र या बृहस्पति तारे के अस्त रहने के दिनों में मुंडन नहीं होता।**)

श्लोक व मंत्र

श्री गणेश श्लोक

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

श्री गणेश मूल मंत्र

ॐ गं गणपतयै नमः ॐ श्री विघ्नेश्वराय नमः।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

विष्णु मंत्र

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देवः।।

मंगला चरण

मंगलम् भगवान विष्णु, मंगलम् गरुड़ध्वजः।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षाय, मंगलाय तनो हरिः।।

गुरु मंत्र

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परमब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं जूंसः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।।
।। ॐ स्वः भुवः भूः सः जूं हौ ॐ।।

शान्ति महामंत्र

ॐ द्यौः शान्तिःरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वीः, शान्ति रापः, शान्तिरोषधयः, शान्ति वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वे देवाः, शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

विवाह संस्कार

सगाई/अँगूठी भेजना

सम्बन्ध निश्चित हो जाने के पश्चात कन्या पक्ष की ओर से सगाई की रस्म में चाँदी की एक अँगूठी व तिलक के रुपये तथा रोली-अक्षत, फल, मिठाई वर पक्ष के पास भेजी जाती है। (**आजकल सोने की अंगूठी भी भेजी जाती है, परन्तु चाँदी की अंगूठी अवश्य जाती है।**)

वैवाहिक कार्यक्रम

विवाह कार्यक्रम का प्रारम्भ सुचारु रूप से निर्विघ्न होने के लिए एवं वर-वधु के नवजीवन की मंगल कामना के लिए भगवान का नाम लेना चाहिये। हमारे परिवार में 'श्री हरिगीता' का पाठ होता है। 'श्री हरिगीता' का पाठ करते समय सम्पुट लगाते हैं।

''श्रीकृष्ण योगेश्वर जहाँ अर्जुन धनुर्धारी जहाँ।
वैभव, विजय, श्री, नीति सब मत से हमारे हैं वहाँ।।''

छठी

विवाह से पूर्व लड़के की छठी की जाती है। यदि परिवार में पहले कन्या का विवाह हो तो उससे पूर्व लड़के की छठी करनी चाहिये। यदि लड़का न हो तो लड़की की छठी करनी चाहिये। विवाह से पहले शुभ मुहूर्त देखकर छठी की तिथि निश्चित कर भात की चिट्ठी भेजी जाती है। छठी की तिथि से पहले दिन रात रखी जाती है। सभी परिवार के व्यक्ति रात के छींटे लगाकर पैसे चढ़ाते हैं। दूसरे दिन प्रातः तारों की छाँव में छठी होती है। बुआ के यहाँ से आये नये कपड़े लड़के/लड़की को पहनाये जाते हैं। बुआ द्वारा परिवार सम्बन्धित नेग किये जाते हैं। बुआ को उसके बदले में उपहार दिया जाता है। उसके बाद भात की रस्म होती है। भात मामा द्वारा दिया जाता है व परिवार के उपस्थित जनों को तिलक किया जाता है। (**आजकल यह रस्म विवाह के अवसर पर ही की जाती है।**)

अँगूठी पहनाना

आँगन में चौक पूर कर बिना कील वाले दो पट्टे बिछावें (एक वर के लिए तथा दूसरा विनायक के लिए) पट्टों पर लाल या गुलाबी रंग का वस्त्र बिछाकर वर तथा विनायक को उस पर बैठाया जाये। सबकी उपस्थिति में पंडित जी से वर के हाथ से गणेश-पूजन कराकर कन्या पक्ष की ओर से आयी हुई चाँदी की अँगूठी पहनायें। अँगूठी के साथ आये हुए रुपयों से तिलक कर दें। इसके बाद बहन या बुआ आरता एवं वारी फेरी करे तथा वर थाल में बहन के लिए रुपये डाले। वर पट्टे पर से उठकर सभी बड़ों के पैर छूकर आशीर्वाद ले। (**यह कार्यक्रम आजकल लग्न के साथ ही होता है।**)

लेना-देना

अँगूठी की रस्म के बाद शुभ मुहूर्त में वर पक्ष को, होने वाली वधू के पहनने के लिए एक साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, रूमाल, तथा बोर चोटी या बैना, सुहाग पिटारी (कलावा, तेल, कंघी, मेंहदी, बिन्दी, चूड़ी आदि) व

आभूषण भेजने चाहियें। फल, मिठाई आदि भी ले जायें। साथ ही चार थैलियों में निम्न सामान भेजा जाता है। प्रत्येक थैली में मेंहदी, डोरा, चूड़ी, पैसे, पीले या लाल कपड़े में पाँच सुपारी और हल्दी से पीले रंगे हुए चावलों के कुछ दाने बाँध कर डालें। इसे **चीर सुपारी** कहते हैं।

1. एक थैली जो नीचे से लाल तथा ऊपर से सफेद कपड़े की हो उसमें सवा सेर मेवा, दो गोले सहित बनायी जाती है।
2. एक सफेद थैली में सवासेर नुकती के लड्डू रखे जाते हैं।
3. एक सफेद कपड़े की थैली में मिश्री को पीले व गुलाबी रंग के छीटे देकर रखें।
4. एक अन्य सफेद थैली में पाँच प्रकार के जाड़े के लड्डू (मेवा के) बनाकर कोथली में रक्खें।

बोर चोटी गूँधना या सगाई पहनाना

वधू के लिए ऊपर लिखा सामान लेकर कन्या पक्ष के यहाँ जाना चाहिए। दोपहर के समय कन्या को सिर सहित स्नान कराके चौकी या पट्टे पर पूरब की ओर मुँह करके बिठावें। कन्या की ननद या ससुराल से आई कोई भी स्त्री अथवा कन्या की भाभी सिर गूँध कर सब वस्त्र व आभूषण कन्या को पहना दे और गोद में मेंहदी डोरा सहित लाये हुए सामान में से थोड़ा-थोड़ा सामान कन्या की गोद में दे देवें। कन्या का मुँह जुठाल कर वारी फेरी करें। उसको माँ या दादी की गोद में बिठावें। इसके बाद कन्या सबको प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करे।

सगाई की विदाई

कन्या पक्ष की ओर से भेंट तथा मिठाई, फल आदि भेजा जाता है।

देव-स्थापना

विवाह का शुभ कार्य आरम्भ करने से पूर्व गणेश जी की मूर्ति द्वारा देव स्थापना की जाती है व सेढ़माता (कुल देवी की स्थापना करनी चाहिए)। गणेश जी सब विघ्न बाधाओं को दूर करते हैं। एक दिया जलाकर व चार नुकती के लड्डू रखकर उसका भोग लगा दें। कुल देवी की स्थापना के लिए एक टोकरी में कपड़ा बिछाकर अपनी कुल देवी स्थापित की जाती है। टोकरी में हल्दी, सुपारी, अक्षत व हरी दूब भी रखें। इस टोकरी को बहन या बुआ घर में ले कर आती है। प्रत्येक रस्म को आरम्भ करने से पूर्व घर की स्त्रियाँ (दादी, माता, जेठानी व देवरानी) सभी इनको छींटे देकर इनकी पूजा करती हैं।

पूजन की थाली

एक थाली में पूजन-सामग्री व गणेश जी की मूर्ति रखें। गणेश जी की मूर्ति नहीं होने पर एक सुपारी में कलावा बाँध कर थाली में रखें। नई सीप में रोली, चावल व हल्दी लेकर साथ ही दूब, फूल, पान, बताशे, सुपारी, एक दीपक तथा जल का एक पात्र भी उसी थाली में रख लें। यह पूजन की थाली समस्त नेग व शुभ कार्यों के समय पूजन में काम में लाई जाये।

कन्या पक्ष द्वारा लग्न लिखाना

कन्या के विवाह में लग्न 5 या 3 दिन पूर्व सुविधानुसार किसी शुभ दिन में लिखी जाये। आँगन में चौक पूरकर बिना कील लगे दो पट्टे बिछावें और उन पर कन्या तथा विनायक को बैठावें। लग्न के समय कन्या को गोटा लगी गुलाबी साड़ी तथा नई नथ पहनाई जाये। पंडित जी द्वारा कन्या के हाथ से पूजा की थाली में रखे गणेश जी व नवग्रह की पूजा कराई जाये। लग्न पत्रिका के अन्दर एक सिक्का, दो हल्दी की गाँठ, दो सुपारी, रोली, चावल के टीके लगाकर पत्रिका बन्द करके उस पर दो कलावे लपेट दें तथा उस पर रोली से स्वास्तिक बना दें। पूजन कराने के बाद लग्न पत्रिका तथा भात पत्रिका पंडित जी द्वारा लिखवायें। लग्न पत्रिका में सर्वप्रथम कन्या पक्ष की ओर के सब पुरुषों के नाम, जिनकी ओर से विवाह का निमंत्रण होता है, लिखते हैं। विवाह की तिथि तथा अन्य रस्मों की तिथि की सूचना भी वर पक्ष को उनके परिवार के सभी सदस्यों के नाम लिखकर दी जाती है। लग्न पत्रिका वर पक्ष के यहाँ भेजी जाती है।

लग्न पत्रिका के साथ ही चार भात पत्रिकाएँ भी लिखी जाती हैं, जिनमें एक भात पत्रिका सर्वप्रथम गणेश जी के नाम लिखी जाती है तथा अन्य तीन पत्रिकाओं में से एक कन्या के नाना-मामा (भातेई) के लिए, दूसरी कन्या की माता के मामा-नाना के लिए (बड़ भातेईयों) तथा तीसरी भात पत्रिका कन्या के पिता के नाना-मामा के लिए लिखी जाती हैं। भात पत्रिका में भी सब घर के पुरूषों के नाम भातेईयों और बड़ भातेईयों के नाम तथा भात की तारीख लिखकर प्रत्येक भात पत्रिका में हरी दूब व पीले अक्षत (चावल), हल्दी की एक गाँठ व एक सुपारी तथा एक सिक्का रखकर पत्रिका बन्द कर उस पर दो कलावे लपेट दें तथा उस पर रोली से स्वास्तिक बना दें। लिखी हुई ये चिट्ठियाँ कन्या की गोद में दे दें। बहन या बुआ आरता व वारी-फेरी करें। कन्या व विनायक का मुँह बताशे से मीठा कराकर उनको देवस्थान पर ले जावें। देवस्थान में जाकर कन्या कुलदेवी आदि का पूजन करे व कन्या की माता कन्या को गोद में बिठाकर आशीर्वाद दे। फिर लग्न पत्रिका वर पक्ष के यहाँ तथा भात की चिट्ठी भातेइयों के यहाँ भेज दें। गणेश जी के नाम की भात पत्रिका पूजन की थाली में ही रख दें।

वर पक्ष द्वारा लग्न लेना

कन्या पक्ष की ओर से लग्न पत्रिका आती है। बिना कील लगे दो पट्टे बिछाकर वर और विनायक को बिठायें। वर के हाथ से गणेश जी तथा नवग्रह की पूजा करावें। इसी समय चार भात पत्रिकाएँ लिखी जायें। एक भात पत्रिका पूजा की थाली के श्री गणेश जी के नाम, एक भात पत्रिका वर के मामा-नाना (भातेई) तथा एक-एक पत्रिका वर की माता व पिता के नाना-मामा (बड़-भातेईयों) के लिए लिखी जायें। इनमें अपने घर के सभी पुरुषों के नाम लिखकर बाद में भातेईयों के नाम व भात की तारीख लिखकर उन्हें आमंत्रित करें। इसके बाद कन्या के यहाँ से आयी लग्न पत्रिका को खोलकर, उसे पढ़कर उपस्थित जनों को विवाह की तिथि तथा समय आदि से अवगत करावें। पूजन के बाद वर की बहन या बुआ आरता व वारी फेरी करे और उन्हें भेंट दी जाये। वर के रूमाल में थोड़े बताशे व लग्न पत्रिका दे दें। वर को देवस्थान पर ले जाकर देव दर्शन करायें। फिर वर को माता की गोद में बैठावें।

हल्द हाथ

वर या कन्या को तेल व उबटन लगाकर सिर सहित स्नान करावें। कन्या को गुलाबी साड़ी (गोटे लगी) पहना कर काली चूड़ी व नयी बनी नथ पहनायी जाये। फिर आँगन में चौक पूरकर दो पट्टे बिछावें। कन्या/वर,

जिसका विवाह हो, उसे और विनायक को पूर्व की ओर मुँह करके बैठावें। गणेश जी व कुल देवी का पूजन करावें। कन्या/वर से डलिया (पिटारी) में रखी कुलदेवी को अर्घ्य दिलवाया जाता है। कुटुम्ब की सब स्त्रियाँ भी कुलदेवी की पूजा करें। वर या कन्या से कुलदेवी पर बताशा, सुपारी व पैसा चढ़वाया जाये। बहन या बुआ आरता व वारी फेरी करे। आरते में कुछ रुपये दिलवा दें। कन्या/वर को देवता के स्थान पर ले जावें। परिवार की बहुओं की गोद में सुपारी व बताशे दिये जायें। दो हथलगी (भाभी, चाची या मामी) के हाथ में कलावा बाँध दें।

चार मिट्टी के कुल्हड़ में डोरा बाँधकर उनके किनारे पीले करें। एक कुल्हड़ में मूँग की दाल रखें। दूसरे कुल्हड़ में उड़द की दाल रखें, तीसरे कुल्हड़ में हल्दी की गाँठें तथा चौथी में कच्चे सूत की कुकड़ी रखें। इन कुल्हड़ों को देवस्थान में ले जाकर रख दें। एक सीधा, जिसमें 1 किलो मैदा या आटा, 500 ग्राम घी, 250 ग्राम गुड़ हो (सीधे में बिस्कुट भी रखे जा सकते है) व कुछ रुपये कुलदेवी के निमित्त रखे जायें। कन्या या वर की माँ सीधे पर छींटे दें। यह सीधा ननद को दिया जाता है। शाम को गुलगुले-पूरी बनाये जाते हैं। 22 पूरी तथा 22 गुलगुला अथवा नुकती के लड्डू देवताओं के निमित्त निकाले जाते हैं, जिन्हें ननद या ब्राह्मण-ब्राह्मणी को देते हैं।

पाँवड़े बनाना

लग्न पत्रिका लिखने के पहले या उसके बाद किसी भी दिन अपनी सुविधानुसार 9 (नौ) किलो मैदा के पाँवड़े बनाये जायें।

9 (नौ) किलो मैदा में लगभग सवा किलो मोयन डालकर 216 पाँवड़े बनाये जाते हैं। निम्न चार दिन पाँवड़े रक्खे जाते हैं- प्रतिदिन एक डलिया में 50 पाँवड़े, रुपये तथा 1 ब्लाउज पीस।

कन्या पक्ष–(1) तेलताई के दिन; (2) रतजगे में; (3) फेरे के समय; (4) विदा के समय।

वर पक्ष–(1) तेलताई के दिन; (2) रतजगे में; (3) घुड़चढ़ी पर; (4) बहू के आने पर रतजगे में।

50-50 पाँवड़े चार बार रखे जाने के बाद 16 पाँवड़े बचते हैं जिनमें से 4 पाँवड़े चाक-पूजन के समय थाली में रखे जाते हैं। कोई पाँवड़ा टूट-फूट जाये, इसलिए कुछ अधिक बना लेते हैं। (**आजकल इससे आधा पकवान बनवाने व देने की प्रथा भी चल गयी है, आधे पकवान की जगह रुपये दे दिये जाते हैं।**)

कोठियार

पकवान बनाने वाले दिन के बाद शादी के लिए बनने वाले सामान को रखने के लिए एक स्थान निश्चित करते हैं, जिसे **'कोठियार'** कहते हैं। इस कोठियार में प्रतिदिन घी का दिया जलाया जाये। शादी के लिए बनी या आई मिठाई आदि हर वस्तु कोठियार में रखी जाये। विदा के दिन कोठियार के दरवाजे की चौखट पर वर के सवासने द्वारा वन्दनवार बाँधी जाती है। उसी समय वर के सवासने को वन्दनवार की तीयल दे दी जाये।

देव-पूजन तथा रतजगा

तेलताई की पहली रात को पूर्व दिशा वाली दीवार पर हल्दी व आटे के पिठावे से **'रात'** अलंकृत की जाती है। (**आजकल रात बनी बनाई (रंगीन) भी मिल जाती है।**) 'रात' के ऊपर लाल कपड़े में हल्दी की गाँठ,

एक सुपारी, पैसे व अक्षत डालकर **'रात'** के बीचों-बीच चिपका दें व उस पर कलावा की जोड़ी भी लगा दें। एक कढ़ाई (बिना कुंडे वाली) में सरसों का तेल डाल कर कलावे की बत्ती जलायें। वर/कन्या को पट्टे पर बैठा कर देवताओं आदि का पूजन तथा सेढ़माता की पूजा करवाई जाती है। माता तथा कुटुम्ब की स्त्रियाँ भी पूजा करती हैं। बताशे, सुपारी तथा पैसा चढ़ाया जाता है। फिर बहन या बुआ द्वारा आरता होता है। सेढ़माता के सामने मायदे की तीयल व सवा ग्यारह रुपये और 50 पाँवड़े तथा एक ब्लाउज़ पीस रखा जाता है। हल्द हाथ के दिन की तरह सीधा भी रखा जाता है। यह नगद, पाँवड़े आदि सब सामान शादी के बाद सवासनी (बहन या बुआ) को दिया जाता है। वर/कन्या देवस्थान में जाकर प्रणाम करते हैं। रात को मंगल गान व **'रतजगा'** किया जाता है। महिलाएँ सगुन की मेंहदी लगाती हैं।

तेल ताई के दिन रतजगा

तेलताई

वर/कन्या को मय विनायक के उबटन लगाकर नहलाते हैं। फिर वर/कन्या को आँगन में चौक पूरकर पट्टा बिछाकर विनायक सहित बिठाया जाये। कुलदेवी की पूजा वर/कन्या तथा उनकी माँ व कुटुम्ब की स्त्रियाँ करें। एक नई कटोरी में सरसों का तेल रखें। दूब के 16-16 टुकड़ों को एकत्रित करके कलावा के सूत से उन्हें बाँधकर 4 गुच्छी बना लें। चार जोड़ी कलावे (**आजकल कांकन बने बनाये आते हैं**), 4 लोहे के छल्ले, 4 लाख के छल्ले, 4 छोटे-छोटे लाल कपड़ों में राई व नमक की डली बाँधकर रखें।

गौर की मूर्ति, जो हर परिवार में होती है, उसको स्नान कराके रोली-चावल लगाकर किसी पात्र में रख दें। अब दो सुहागिन स्त्रियाँ (भाभी, चाची आदि हों) हरी दूब की दो लच्छियों को तेल में डुबोकर पहले उनसे गौर माता के नीचे से ऊपर दोनों पैर के पंजों, दोनों घुटनों, दोनों कंधों और माथे पर तेल चढ़ावें। इसी प्रकार दूब की लच्छियों द्वारा वर/कन्या पर भी तीन बार तेल चढ़ाया जाये। तेल चढाने वाली स्त्रियों को टॉफी/मिठाई खिलायी जाये।

कांकण बाँधना

तेल चढ़ चुकने के बाद कलावा में लोहे का एक छल्ला, एक लाख का छल्ला, एक पोटली राई-नमक की बाँधकर, इस प्रकार के चार कांकण तैयार किये जाये। (कांकण बने बनाये आते हैं) दो कांकण गौर के पैर और हाथ में बाँध दिये जाये। बाकी दो में से एक वर के दाहिने हाथ में और एक बायें पैर में, सात मजबूत गांठें, जो एक सूत के बीच से दूसरा सूत निकाल कर लगाई जाये, द्वारा बाँध दिये जायें। इसी प्रकार कांकण कन्या के बायें हाथ में तथा दायें पैर में बाँधा जाये।

इसे **'कांकण बाँधना'** कहते हैं। उसके बाद 4 सुहागी तथा 2 बरूठे जिमाये जाते हैं।

ब्रह्मा पूजा (चाक पूजन)

आजकल चाक व कुम्हार प्रायः नहीं मिलते हैं, अतः ब्रह्मा जी की मूर्ति या चित्र को किसी गोल पटरे या चकले पर सजाकर उसकी पूजा की जाये। वर/कन्या तथा उसकी माता, कुटुम्ब की अन्य स्त्रियों के साथ पूजा करें। पूजा कर चुकने पर जेघड़ रखकर चारों ओर पाँच स्वास्तिक बनावें व रोली या हल्दी से पूजन करें। मिट्टी का एक घड़ा ननद को, एक घड़ा बड़ी-बूढ़ी स्त्री को तथा सभी उपस्थित स्त्रियों को एक-एक हांडी दें। आँगन में मंडप के स्थान पर उपरोक्त जेघड़ (करवे वाली छोटी हाँडी या पीतल की छोटी हाँडी) रखवा कर पानी भरवा दें। यह पूजा प्रायः घर के बाहर की जाती है। माता पूजा के बाद घर के मुख्य द्वार के दोनों ओर साथिया बना कर भीतर आवे। ब्रह्मा-पूजन में मूँग, चावल, मँगोड़ी, चार पापड़, चार सुहाल, चार लड्डू, तेल, गुड़, कुछ रुपये और एक कपड़ा होना चाहिए। यह सामान पुरोहित या ब्राह्मण को देना चाहिए।

बूढ़ा बाबा पूजना

वर अथवा कन्या की मां **'बूढ़ा बाबा'** की पूजा करती है। बूढ़ा बाबा पूजन में एक तौलिये पर 7 जगह पर 4-4 पूरी पर 2-2 बेसन की पकौड़ी, 1-1 बताशा/पूआ, 1-1 बैगन की फाक, कुछ रुपये होने चाहियें। यह सामान बहन/बुआ या ब्राह्मण को देना चाहिये।

भात

यह रस्म चाक पूजन के बाद होती है। भात में कन्या/वर के मामा-नाना के यहाँ से प्रायः निम्न सामान आता है—

कन्या का भात—कन्या की माता की चूंदड़ी, एक साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, रुमाल व आभूषण या उपहार, हरी-लाल चूड़ियाँ, मेंहदी डोरे, कन्या के पिता का जोड़ा, सास की तीयल, ससुर का जोड़ा व तिलक, कन्या के लिए अनवट, बिछिए, कन्यादान के लिये आभूषण या उपहार, कन्या के लिए गुलाबी दुपट्टा जिससे गठजोड़ किया जाता है तथा अन्य रिश्तेदारों के तिलक-उपहार आदि। थाली के लिये रुपये तथा कन्या के भाई बहनों के कपड़े भी हों।

भात का अन्य सामान—दो कलश, दो लोटे, एक टोकनी व लोटा, पलंग व पलंग का बिछावन, तकिया, चौकी तथा चौकी का बिछावन, एक परात व एक थाली, महरी (नौकरानी) के लिए धोती। (**आजकल बरतन व पलंग आदि देना बन्द-सा हो गया है और इसके स्थान पर रुपये दिये जाने लगे हैं।**)

वर का भात—वर के लिए वस्त्र व जूते, वर के पिता का जोड़ा व तिलक, वर की माता के लिए चुंदड़ी व तीयल और आभूषण या उपहार; वर के लिए गोटा लगा हुआ गुलाबी दुपट्टा तथा सास-ससुर का जोड़ा व तीयल, विनायक के कपड़े; बहू की मुँह दिखाई के लिए आभूषण और वर के भाई-बहनों के वस्त्र, अगर हो तो देवरानी, जेठानी व ननद की साड़ी व सभी सम्बन्धियों के तिलक देने की भी प्रथा है।

भात पहरना

वर अथवा कन्या की माता के मायके से भाई-भावज भात लेकर आते हैं। भातेई के स्वागत के लिए घर के मुख्य द्वार को सजावें। मुख्य द्वार के बाहर चौक पूरकर दो पट्टे रखें जिन पर भाई-भावज खड़े हों तथा

भातेईयों के साथ आये हुए सभी सज्जन उनके पीछे खड़े हों। द्वार के भीतर की ओर भी चौक पूरकर दो पट्टे बिछाकर वर/कन्या के माता-पिता खड़े हों। उनके पीछे अन्य कुटुम्बी स्त्री-पुरुष खड़े हों। बहन अपने भाइयों का फूल-माला आदि पहनाकर स्वागत करे। महिलाएँ मंगल गान करें। बहन आरते की सजाई हुई थाली में दीपक सजाकर आरता करे व भाई के माथे पर तिलक करके रुपये दें और भावजों के बिन्दी लगाकर गोदी में रुपये दें। एक नया कपड़ा, राई-नोन, सात पीली सीकों में आटा चिपका कर भाई-भावज के ऊपर से वार कर भाई के पीछे डाल दे। भाई, बहन को चुंदड़ी ओढ़ावें। आरते की थाली में रुपये डालें और बहनोई को तिलक करके जोड़ा दें।

बहन के सास-ससुर को तीयल जोड़ा दें व तिलक के रुपये दें तथा समस्त रिश्तेदारों कन्या के बाबा, चाचा, ताऊ, तथा चाचा-ताऊ के प्रत्येक उपस्थित लड़कों के तिलक करके उन्हें रुपये दें। वर के लिए जो कपड़े, दुपट्टा, जूता आदि लाये गये हों वह उन्हें दें। विनायक के कपड़े भी देने चाहिए। इसके बाद भातेईयों (भात लाने वालों) को आदरपूर्वक घर के अन्दर ले जाकर उन्हें बैठाकर झूठ (एक पात्र में कुछ मीठा या किशमिश व मेवा आदि रखकर) द्वारा उनका मुँह जूठा करा दें। शरबत आदि ठंडा पिलावें व पगधोई करावें। जेघड़ में सगुन के रुपये डाल दें। 2 या 5 ब्राह्मण जिमाये जाते हैं।

भात की विदा में भाई-भाभी, भतीजों के तिलक के रुपये दिये जाते हैं। भाभी व भतीज बहू के लिए ब्लाउज पीस दिये जायें। एक लोटा, एक कटोरा (इच्छा अनुसार बर्तन), सवा गज गुलाबी कपड़ा या रुपया, सवा दो किलो मीठे, नमकीन सकरपारे की कोथली, लड्डू, फल मिठाई आदि दी जाती है।

मंडप-रोपन

कन्या के विवाह में भात पहन चुकने के बाद मंडप-रोपन होता है।

बाली पहनाना

माढ़ा गाड़ने के पश्चात् कन्या के चाचा व ताऊ कन्या को सोने की बाली पहनायें। कन्या के पिता द्वारा उन्हें एक पत्तल (4 लड्डू—4 कचौरी की) देकर व तिलक करके इच्छानुसार रुपये दिये जायें।

फोकण्डी

कन्या/वर की माता एक हांडी में 32 लड्डू तथा मैदा के बने 32 फल और उसके ऊपर साड़ी या तीयल व कुछ रुपये रखकर अपने परिवार की बड़ी स्त्री को देकर सम्मानित करे और आशीर्वाद प्राप्त करे। यदि बुजुर्ग पुरुष को फोकण्डी देनी है तो पुरुष के कपड़े दिये जायें।

घुड़चढ़ी के लिए तैयार सामान की सूची

वर के कपड़े, गुलाबी दुपट्टा, हार फूलों का, फूल, साफा, मौड़ी, सेहरा, कलंगी, विनायक के कपड़े, काजल की डिब्बी, काजल डलाई के नेग हेतु सामग्री, तसले में घोड़ी के लिये भीगी हुई चने की दाल 1 किलो, सजा हुआ आरता थाल, सात पीली सींके वारने की, एक ब्लाउज पीस वारने का, लाल थैली में बूंदी के लड्डू, गठ जोड़ा, माता को दूध पिलाई, बहन बुआ मौसी को घोड़ी के आगे की साड़ी।

घुड़चढ़ी

भात के बाद उसी दिन शाम को सुविधानुसार वर को स्नान कराके मामा के घर से आये कपड़े पहनाये जायें। वर का बहनोई साफा बाँधे, सेहरा बाँधे। विनायक को भी नये कपड़े पहनाये जायें। वर के साफा पर मौड़ बाँधी जाये, कलँगी लगाई जाये। वर के कंधे पर गुलाबी दुपट्टा रखा जाये। उसे वर के पिता इच्छानुसार उपहारस्वरूप भेंट या रुपये दें।

आँगन में चौक पूर कर उस पर पट्टे व कालीन बिछाकर दायीं ओर वर व बायीं ओर विनायक को बैठायें। वर के माथे पर रोली-अक्षत से पहले बहन (सवासनी) तिलक करे। भाभी, मामी, चाची आदि काजल डालती हैं। उन्हें कुछ भेंट दी जाती है। सब कुटुम्बीजन सम्बन्धी व मित्रगण भी वर को तिलक करें, आशीर्वाद दें। बहन या बहनोई आरता करें व वारी फेरी करें।

गठजोड़ा घुड़चढ़ी के समय ही दे देते हैं। यह वर की बहन या बुआ के यहां से आता है। मलमल की धोती को हल्दी से किनारे रंगकर उसमें एक नारियल, सुपारी, हल्दी की गाँठ तथा पैसे बाँध कर गाँठ लगा देते हैं। इसके पश्चात् वर पट्टे से उठकर नातेदारों सहित बाहर निकले। वर सजी हुई घोड़ी पर सवार हो। चने की दाल, दूध, पानी, हरी दूब रखकर घोड़ी को खिलाया जाये तथा घोड़ी वाले को न्योछावर दी जाये।

वर की माता एक थैली में लड्डू रखकर वर को दे। वर अपनी माता को दूध पिलाई का नेग भेंट करे। अपनी बुआ व बहनों आदि को साड़ी भेंट करे। पहले देवालय में जाकर वर भगवान के दर्शन करे।

बरी में भेजने का सामान

कन्या के शहर में पहुँचकर निकासी से पहले वर पक्ष द्वारा कन्या के लिए 5 गोद जो गुलाबी कपड़े की बनी हो निम्नानुसार भेजी जाती है—एक गोद फेरों की, एक गोद बरी की, एक गोद कांकण की, एक गोद सिर गूंधी की व एक गोद पलंग की। इस प्रकार पाँच गोदें होती हैं, जिसमें एक बड़ी गोद होती है। उसमें एक साबुत गोला व लगभग 500 ग्राम मेवा रहती है। बाकी चार छोटी गोदों में चीर सुपारी व लगभग 250 ग्राम मेवा होती है। प्रत्येक गोद में कुछ रुपये भी डालें।

स्वागत बारात

जब बारात कन्या पक्ष वालों के मुख्य द्वार पर पहुँच जाये, तो बरात के स्वागत के लिए, कन्या के दो छोटे भाइयों या भतीजों को लेकर आगे पहुँचें। वर को माला पहना कर उसका स्वागत करें। वर दोनों लड़कों के तिलक करके रुपये व एक-एक गोला भेंट करे। बरातियों का फूल माला आदि से मुख्य द्वार पर ही स्वागत किया जाये।

कन्या पक्ष मुख्य द्वार पर नौशे को चौकी पर खड़ा करके कन्या की माता चाँदी की बनी जाली में से वर का मुँह देखे। राई-नमक ऊपर से उतार कर वर के पीछे डाल दें। एक कपड़ा, सात पीली सीकें वर के ऊपर से वार कर वर के पीछे डाल दें। वर का आरता करके माथे पर तिलक करे व उसे कुछ रुपये दे।

वर माला

मंगलगान के वातावरण में और वर के खड़े हो जाने पर कन्या जयमाला डाले। वर भी कन्या को जयमाला पहनावे। इसे **'जयमाल डालना'** कहते हैं।

सम्प्रदान

वर को एक चौकी पर, जिस पर लाल रंग की बिछावन (गोटा लगा हुआ), बैठा कर चौकी के दोनों ओर दो कलश रखे जायें। कलश पर लोटा व नारियल रखा हो। पंडित जी द्वारा वर के हाथ से गणेश जी तथा नवग्रहों की पूजा कराई जाये। कन्या का पिता वर के पेची बाँधे और तिलक कर रुपया दे। वर को पहनने के कपड़े व एक स्वर्ण की अँगूठी/चेन, घड़ी आदि परात में रखकर भेंट स्वरूप दिये जायें। वर का सवासना आरता करें। इस रस्म को **'सम्प्रदान'** कहते हैं।

विवाह

कन्या बहन-बुआ के घर की आई चूंदरी पहने। मामा उसको सिल पर खड़ा करके अनवट बिछिये पहनावे। जो आभूषण कन्या को देने हों वे उसे पहना दिये जायें। यह आवश्यक है कि फेरों के समय कन्या के शरीर पर सुन्दर वस्त्र व आभूषण हों। परन्तु वर पक्ष की ओर का कोई वस्त्र या आभूषण न हो। कन्या का मामा फेरों से पहले वर के तीन फेरे कराए।

कन्या को बुलाकर गऊदान, वस्त्रदान, अन्नदान, छायादान, पोलादान आदि करने के बाद कन्यादान होता है। पहले माता-पिता कन्यादान करते हैं फिर अन्य सम्बन्धी अपने जोड़े के साथ कन्यादान करते हैं। कन्यादान के बाद हवन व फेरे होते हैं। फेरे के समय एक डलिया में 50 पाँवड़े, एक ब्लाउज पीस तथा रुपये मंडप के पास रखने चाहिये। यह कन्या के ससुराल जाते हैं।

कन्या पक्ष द्वारा वर पक्ष के बुजुर्ग को सोने की सीख व 250 ग्राम का नुकती का लड्डू जिसमें एक सिक्का रखा होता है, सम्मान पूर्वक दिया जाता है।

बरी पहनाना

फेरों के बाद वर-पक्ष के यहाँ से आई बरी की वस्तुएँ कन्या को पहनाई जाती हैं। बरी में एक साड़ी, चुनरी, सुहाग पिटारी, मेंहदी, डोरे, दो जोड़े चूड़े (चूड़ियाँ), चप्पल, मौड़ी, चार गोद छोटी व एक बड़ी गोद दी जाये, जिनका वर्णन गोद के शीर्षक में कर चुके हैं। साथ में एक सोने की अँगूठी कांगन के लिए तथा वधू के लिए आभूषण आदि भी होने चाहियें। वर की बहन, बुआ, भतीजियाँ, भांजी जो बारात में आयी हों, वे विवाह-मंडप के नीचे वधू को बिठलाकर बरी पहनावें। वधू का मुँह जुठला दें।

जूता चुराई

सालियों द्वारा जूते चुराये जाते हैं। उन्हें जूता वापस करने का नेग, एक गोला, पान व कुछ रुपये भेंटस्वरूप देकर जूते वापस कर दिये जाते हैं। आजकल कुंवर कलेवा न होने के कारण सालियाँ फेरे के समय ही वर के जूते चुरा लेती हैं और बाद में नेग लेकर वापस कर देती हैं।

विदा के समय का सामान

विदा में पाँच प्रकार का पकवान—गुना, आस, फल, पांवड़े और लड्डू दिये जाते हैं। गुना, आस, पांवड़े—ये मीठी और फीकी दोनों तरह की बनती हैं। आटे के लड्डू व तिल के लड्डू बनते हैं। इन सबका वजन 5 किलो हो। एक थैली में सवा किलो मीठे व नमकीन सकरपारा, सात गुझिया रखकर थैली रंगीन लाल या पीले धागे से सी दी जाये। थैली को एक डलिया में रखकर डलिया पर लाल या गुलाबी नया कपड़ा ढककर रंगीन धागे से सी दिया जाये। इसे **'बायना संजोना'** कहते हैं। इस डलिया के ऊपर एक थैली, जिसमें (लगभग 500 ग्राम) सकरपारा भरकर, सी कर रखी जाये। यह **'रास्ते की कोथली'** कहलाती है। एक अन्य डलिया में 15 पूरी माठ की भी रखें व नए गुलाबी कपड़े से ढक कर रंगीन धागे से सी दें। इसे **'माठ संजोना'** कहते हैं।

बर्तन

एक टोकनी, दो परात, दो थाली, दो लोटे, सात कटोरी।

सवा किलो मूँग, सवा किलो चावल दिये जाते हैं। एक पीतल की टोकनी में 25 लड्डू नुकती के, प्रत्येक लड्डू लगभग 100 से 125 ग्राम का हो, ये लड्डू आदि सामान समधन के लिए होता है। टोकनी के भीतर सब सामान डाल कर टोकनी के मुँह पर लोटा रखकर पिठावे से बंद कर दें। लोटे में घी भरा जाये। टोकनी को पिठावा से चित्रकारी करके सजाया जाता है। माठ की 10 से 15 पूरी, 50 या 100 पाँवड़े, सकरपारे की दो कोथली सवा-सवा किलो की बनाई जायें। यह बिदा के समय दी जायें। लड्डू व कचौरी की पत्तल भी दी जाती हैं। पत्तलें इच्छानुसार 25 या अधिक हों। (**आजकल पत्तल की जगह मिठाई/भाजी के डिब्बे भी दिए जाते हैं।**)

तीयल

महिलाओं के जोड़े—कन्या के साथ समधन, दादस, नानस, वंदरवार, फेरपट्टा, वस्त्रदान तथा पिछोपा इस प्रकार सात तीयल भेजी जाती हैं। समधन की तीयल के साथ इच्छानुसार रुपये या उपहार दें। नानस, दादस की तीयल के साथ भी भेंट इच्छानुसार दें। तीयल में साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, रूमाल, तौलिया/स्वेटर आदि पांच वस्त्र तथा इच्छानुसार रुपये होते हैं।

पुरुषों को जोड़े—समधी, दादसरा, नानसरा, चाचा-ताऊ, सवासना इस प्रकार पांच जोड़े पुरुषों के होते हैं। प्रत्येक के साथ इच्छानुसार तिलक के रुपये दें। जोड़े में पैन्ट, कमीज, रूमाल, मोजे, तौलिया/स्वेटर आदि पाँच वस्त्र होते हैं।

बंदनवार बाँधना—वर का बहनोई कन्या पक्ष के कोठियार में बंदनवार बाँधे तथा नेग में बंदनवार की तीयल दी जाती है।

पलंग—पलंग या पट्टे बिछाकर उस पर वर और कन्या को मौड़ी बाँधकर बिठाया जाये। सब नातेदार तिलक करके परिक्रमा कर भेंट दें। वारी फेरी करें। पहले कन्या पक्ष के सवासने को जोड़ा देकर तिलक करें। इसके बाद वर पक्ष के, यदि वे अपने सम्बन्धियों को जोड़े दिलवाना चाहें, तो दादासरे, ससुर, चाचा, ताऊ, नानासरे व सवासने का मण्डप के नीचे तिलक करें व जोड़े पहनावें; अन्यथा इस समय तिलक ही दे दें। उनके ऊपर धान या जौ डाले जाते हैं। पलंग या पट्टे से उठकर वर मंडप के उत्तर की ओर के बंधन को खोल देता है। इसे **'तनी खुलाई'** कहते हैं। इसका नेग वर को दिया जाता है। (**यह रस्म भी आजकल नहीं की जा रही है।**)

फेरपट्टा–कन्या पक्ष के यहाँ की आखिरी रस्म विदा की होती है। यह रस्म सूर्य की साक्षी में होनी चाहिये। आजकल प्रातः तक बारात नहीं रुकती, इसलिए पलंग के बाद ही फेर-पट्टा कर दिया जाता है। विदा से पहले चौक पूरकर पट्टा बिछाकर वर-कन्या को बैठाते हैं। पंडित गणेश जी व अन्य देवताओं की पूजा करवायें। वधू की सवासनी आरता करे और वर उसको आरते की थाली में रुपये दे। वर तथा कन्या के नीचे बिछाये हुए पट्टों को आपस में बदलवा दें। पट्टों को इस प्रकार बदला जाये कि वे आपस में भिड़ने न पावें। कन्या को एक गुलाबी ओढ़ना ओढ़ा दिया जाता है। फेरपट्टे की गोद दी जाती है। फेरपट्टा वाली तीयल वर पक्ष को दी जाती है। आरता किया जाता है। अब कन्या कोठियार की देहली पूजती है। नौकरों, नाइन, महरी आदि को कन्या के हाथ से वस्त्र और रुपये दिलवाये जाते हैं, जो वर पक्ष वाले देते हैं। इस रस्म के बाद वर-वधू विदा कर दिये जाते हैं। वे अब वहाँ ठहर नहीं सकते। कन्या के नीचे जो पट्टा बिछा था और सीप जिससे पूजा व तिलक आदि किया गया था, वे कन्या के साथ जाते हैं। कन्या को सब उपस्थित जन खीसी देते हैं। इसमें रुपये या कुछ उपहार दिया जाता है।

विदाई–कन्या सभी परिवारजनों से गले मिलकर बड़ों का आशीर्वाद लेकर पति के घर को जाती है। कन्या पक्ष के यहाँ से कन्या विदा करने के बाद मूँग चावल की खिचड़ी बनती है। कोई अच्छा दिन देखकर मण्डप उतार दिया जाता है तब कथा कहलवा कर ब्राह्मण जिमा दें। देवता को भी विदा करते हैं। हलुवा बनाकर कढ़ाई ठंडी करते हैं। इस प्रकार कन्या के विवाह की रस्म पूर्ण हुई।

बारात वापस आने पर वर पक्ष के यहाँ की रस्में

बारात वर के घर पहुँचने पर नववधू का द्वार पर ननदरानी स्वागत करके वधू को गाड़ी से उतारती हैं, मांग भरती हैं और बिन्दी लगाती हैं। वर की माता मुख्य द्वार पर चौक पूरकर पट्टे पर वर तथा वधू दोनों को खड़ा करके उनका स्वागत करके आरता करती है। नेती (छाछ बिलोने वाली रस्सी) से दोनों को नापती है। यह जानने के लिए कि वधू मेरे पुत्र के अनुरूप लम्बी है या नहीं।

सात तश्तरियों में आटे की कच्ची पूरी रख दी जाती हैं। वर चाकू से तश्तरियों को छूता है एवं वधू इन सातों तश्तरियों को इस प्रकार उठावे कि वे आपस में आवाज न करें। वर-वधू गठजोड़े से घर में प्रवेश करते हैं और सीधे देवस्थान पर जाते हैं।

वार रुकाई

देवस्थान पर जाते समय भाई व भावज का परिचय लेने व वार रुकाई के लिए बहन द्वार पर खड़ी होती है। भाई स्नेहसहित बहन को सम्मानपूर्वक भेंट (धन) देता है।

देवपूजन

देवस्थान में जाकर वर-वधू देवपूजन करते हैं। कुटुम्ब के सभी जन यथायोग्य एक के पीछे एक होकर बैठते हैं। सबसे आगे वधू बैठती है फिर उसके बाद छोटा देवर बैठता है। इसके बाद लाइन में छोटों से शुरू करते हुए परिवार के अन्य लोग बैठते हैं, सबसे अन्त में बुजुर्ग। एक सूप में मूँग, चावल रखकर वधू को दिये जाते हैं कि वह इनका इस तरह से सूप से पीछे को फटके कि यह अनाज सब जनों के पास तक पहुँच जाये। इसका आशय यह है कि छोटे से बड़े तक सबके भरण-पोषण की व्यवस्था करना वधू का कर्तव्य होगा। इसे **बहू-पसारा** कहते हैं।

वधू के पीछे जो छोटा देवर बैठा है उसे वधू पांच लड्डू दे। देवर प्रसन्न होकर भाभी से कहे कि **''पाँच लड्डू मुझको, लाल बेटा तुझको''।** इसके बाद सास वधू का मुँह देखे, मुँह दिखाई दे और वारी फेरी करें। फिर घर के अन्य कुटुम्बीजन वधू की मुँह दिखाई करके वारी फेरी करें।

कांकण खोलना

बहू के आने पर रतजगा

वर-वधू नहा लें तब कांकण खोलने का आयोजन किया जाये। भाभी, चाची या मामी कांकण खिलवायें। कांकण खेलने के समय कूंडे में जल, दूब व हल्दी डाल दें। फिर दोनों के कांकण खुलवा कर कूँडे में ही डाल कर कांकण खिलवायें। कूंडे में एक चाँदी व एक सोने की अँगूठी डालकर कांकण खिलवाते हैं। 5 या 7 बार कांकण खिलाया जाता है। आखिरी बार में जिसकी मुट्ठी में सोने की अँगूठी आ जाती है उसकी ही जीत मानी जाती है। अब वधू की बन्द मुट्ठी को वर द्वारा खुलवायें। इसके बाद वर वह सोने की अँगूठी वधू को पहनावे। ननद आरता करे व उसे आरते में भेंट दी जाये। दोनों को उठाकर देवस्थान पर ले जायें। ले जाते समय बहन वार रुकाई करें। देवता पर छींटे दिलवा दें। वधू को नया जोड़ा पहनवाया जाये।

इसके पश्चात् भोजन आदि होता है। सर्वप्रथम चार सुहागिन व दो बरुठे खिलाये जाते हैं। बहू से भोजन परोसवाना चाहिए। रात को रतजगा किया जाता है। गाना-बजाना व नाच आदि होता है। वधू से भी गाना व नाच कराया जाता है। इस प्रकार उसकी भी परीक्षा हो जाती है।

देव-स्थान में एक किलो मैदा या आटा, 500 ग्राम घी, 500 ग्राम गुड़, एक तीयल तथा कुछ रुपये चढ़ाये जाते हैं। 50 पाँवड़े, एक ब्लाउज, तथा रुपया एक डलिया में रक्खे जाते हैं। **'रात'** की पूजा की जाती है। पूजा के बाद बहू कुछ मीठा देकर सबके पैर छूती है।

बायना खोलना

बहू के साथ आया हुआ सामान (बायना) खोला जाता है। बायने की डलिया सौभाग्यवती स्त्रियाँ खोलती हैं। उसमें से देवताओं के निमित्त 22 पकवान निकाले जाते हैं, जो ननद को अथवा ब्राह्मणी को दिये जाते हैं। टोकनी खोल कर बड़ा लड्डू वधू की सास को दिया जाता है। फिर दो लड्डू के 22 टुकड़े करके, जो देवताओं के निमित्त होते हैं, (अछूते) निकाले जाते हैं। ये भी ननद या ब्राह्मणी को देते हैं। शुभ दिन देखकर बहू की मायके को वापसी होती है। सवा सेर सकरपारा एक कोथली में रखकर बहू के साथ दिये जाते हैं। समधन की तीयल व एक अन्य साड़ी और दें।

विवाह के पश्चात शुभ दिन देखकर भगवान सत्यनारायण की कथा की जाती है।

मनुष्य-जीवन का अन्तिम संस्कार (अन्त्येष्टि)

मरणकाल का ज्ञान होने पर

1. उपस्थित जनों को भगवत् नाम-स्मरण करना चाहिए और यदि मरणासन्न में सुनने व बोलने की शक्ति है तो उससे भी कहलाना चाहिए। हमारे परिवार में 'श्री हरिगीता' का पाठ होता है।
2. तुलसीदल पीसकर गंगाजल में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाना चाहिए, इससे साँस निकलने में शान्ति मिलती है।
3. गले में तुलसी की माला पहनानी चाहिये।
4. पास में तुलसी का पौधा रक्खें, इससे वहाँ की वायु शुद्ध हो जायेगी।
5. दिन हो या रात, घी का दीपक जलाकर रखना चाहिये।
6. मरणासन्न को पलंग से नीचे उतार कर लिटा दें तथा पैर दक्षिण दिशा की ओर होने चाहियें।
7. धरती शुद्ध करके (साफ करके गंगाजल व काले तिल, छिड़ककर कुशा बिछाकर) एक धुली सफेद चादर पर मरणासन्न को लिटा दें।
8. दान-पुण्य जो हो सके करवा देना चाहिए। (गाय को घास, अनाथों को द्रव्य, भूखे को भोजन आदि)

प्राण निकलने के पश्चात्

1. मरने के बाद मृतक की आँख या मुँह खुला हो, तो उसे बन्द कर दें। नाक रुई से बन्द कर देनी चाहिए।
2. मल-मूत्र हो गया हो, तो शुद्ध कर दें।
3. मुँह को चादर से ढक दें।
4. दोनों हाथ उसके बगल में सटा दें तथा पैर के अँगूठों को आपस में बाँध दें। नाभि पर नमक की पोटली रखने से शरीर में सड़न देर से होती है।
5. मृतक के चारों ओर काले तिल, सरसों/राई तथा हल्दी की रेखा खींच दें, चींटी वगैरह नहीं आयेंगी।
6. मृतक के सिरहाने तुलसी जी का पौधा रखना चाहिए और घी का दीपक पास में जलायें।
7. धूप/अगरबत्ती जलायें।
8. जहाँ तक हो सके 'गीता' का पाठ या भजन करें या इनके कैसेट, सी.डी. लगा दें। इससे मृतक आत्मा को शान्ति मिलती है। 'श्री हरिगीता' का पाठ करते समय सम्पुट लगाते हैं।

''मेरा लगाता ध्यान कहता ॐ अक्षर ब्रह्म ही।
तन त्याग जाता जीव जो पाता परम गति है वही।।''

9. पंडित से पता करें कि मृत्यु पंचक में तो नहीं हुई। अगर पंचक हो, तो पांच पुतले बनाकर मृतक के पास चिता में रख दिये जाते हैं। यह पूजा पंडित करा देते हैं।
10. यदि दाहकर्म में 20 घण्टे से अधिक हों तो मृतक शरीर को बर्फ पर रख देना चाहिये।
11. इष्ट मित्रों, सम्बन्धियों को सूचना देनी चाहिए।
12. मृत्यु की तिथि जिस दिन दाग लगा हो उसी दिन से माननी चाहिए (मृत्यु के दिन से नहीं)।

दाह कर्म

हर शहर में कई दुकानें ऐसी होती हैं जहाँ दाहकर्म का सभी सामान एक ही स्थान पर मिल जाता है।

सामान की सूची

1. कम से कम पाव भर फूल; 4-5 लड़ फूल मालाएँ, 10-12 पान।
2. इत्र की शीशी, चन्दन, कपूर, गुलाब जल की शीशी, थोड़ा शहद।
3. दूध, दही, शक्कर, घी, 500 ग्राम जौ का आटा (पिण्ड बनाने के लिये), 50 ग्राम काले तिल।
4. कपूर 50 ग्राम, हवन सामग्री 4-5 पैकेट, मखाने, गोले या नारियल पाँव पूजने के लिए, 2 जनेऊ (पुरुष मृतक के लिए), 100 ग्राम कलावा।
5. चन्दन की लकड़ी के 5-6 टुकड़े, तुलसी की लकड़ी, देशी घी (2 किलो का डिब्बा), शक्कर डेढ़ किलो, राल दो किलो।
6. मुख में रखने को पंचरत्न।
7. अगर मृतक सुहागिन स्त्री है, तो मेंहदी, सिन्दूर, तेल, कंघी, चूड़ा, नथ, बिन्दी, चुन्दड़ी।
8. मृतक के ऊपर डालने के लिए शाल।
9. पैर पूजने वाली जितनी स्त्रियाँ हों उतने नारियल लेने चाहिए। स्त्री की मृत्यु होने पर पैर पूजने के लिये साबुत गोले व रूमाल होते हैं। साथ में रुपये भी रखे जाते हैं।
10. यदि मृतक वृद्ध हो तो चाँदी-सोने के फूल व मखाने आदि भी होने चाहिए। वृद्ध मृतक के ऊपर पोते चंवर हिलाकर अपना सेवाभाव दर्शाते हैं।
11. दाह कर्म करने वाले के लिए पहनने की एक धोती, एक बनियान, डेढ़ मीटर अंगोछे के रूप में सफेद कपड़ा, पैरों में पहनने की चप्पल, जनेऊ, थाली और लोटा चाहिए।
12. मृतक का बड़ा पुत्र ही मुखाग्नि देता है और सभी कार्य करता है। यदि किसी कारणवश वह उपस्थित न हो, तो सबसे छोटा पुत्र या दोनों की अनुपस्थिति में कोई भी पुत्र या निकट सम्बन्धी क्रियाकर्म करता है।

अर्थी

1. 7 फुट लम्बे 2 बाँस तथा लगभग 3 फुट लम्बे 8-10 बाँस के टुकड़े।
2. अर्थी पर बिछाने के लिए पतवार तथा नया सफेद कपड़ा (सात-साढ़े सात मीटर कपड़ा ठीक रहता है) लाश के ऊपर व नीचे के लिए (दो-सवा दो मीटर नीचे, दो-सवा दो मीटर ऊपर, लगभग आधा मीटर सर बाँधने के लिए, डेढ़ मीटर कमर में बाँधने के लिए, डेढ़ मीटर कुरते के लिए)
3. अर्थी बाँधने के लिए दो गोले बान और कलावा। कलावा बान के साथ लपेटा जाता है। बाँधते समय फूलमाला की भी आवश्यकता होती है।
4. जो दो लम्बे बाँस लाये गये हैं, उनको किसी वस्तु (ईंट) आदि पर रखकर उसमें छोटे (3 फुट) वाले बाँस पर कलावा लिपटे बान से मजबूती से बाँधा जाये। सर के नीचे का बाँस का टुकड़ा फटा नहीं होना चाहिए।
5. एक घड़ा।

— सामान आ जाने पर क्रिया करने वाले की नाई द्वारा हजामत (शेव) बनवायी जाती है। इस कार्य में संकोच नहीं करना चाहिए क्योंकि यह मृतक के प्रति सम्मानसूचक प्रथा है और क्रिया करने वाले की पहचान भी।

— दाह कर्म करने वाला स्नान करे, स्वच्छ कपड़े पहन कर जनेऊ धारण करे।

— मृतक को स्नान करवायें। मिट्टी के एक घड़े में पानी भरकर बायें हाथ से लायें और मृतक को स्नान पैर की ओर से शुरु करके सिर तक करायें। मृतक अगर स्त्री है तो पुत्र ही स्नान कराये, परन्तु वस्त्र बहुयें या परिवार की स्त्रियाँ पहनायें।

— मृतक पुरुष का जनेऊ, यदि पहने हो तो पैर की ओर से उतारा जाये और नया जनेऊ जोड़ा गले से पहनाया जाये।

— पहने हुए कपड़े निकालकर नये कपड़े पहनाये जायें। माला, चन्दन, इत्र लगाकर अर्थी पर लिटाया जाये। पैर दक्षिण दिशा की ओर होने चाहियें।

— सुहागिन स्त्री को लाल साड़ी, फूल माला पहना कर श्रृंगार करें। पति माँग में सिंदूर लगा दें। अर्थी पर मृतक को लिटाकर ऊपर से चुँदड़ी डाली जाये।

— यदि मृतक विधवा हो, तो माथे पर चन्दन, गले में फूल व तुलसीमाला, सफेद साड़ी पहनायें। उसे सजावें। अर्थी पर लिटाने के बाद सफेद कपड़ा डाला जाये और ऊपर से शाल डाला जाता है।

— यदि मृतक गर्भिणी हो, तो गर्भस्थ शिशु को डाक्टर द्वारा निकलवा देते हैं। बालक को अलग करके ही स्त्री का दाह कर्म किया जाता है। मृतक शिशु को शमशान में ही गड्ढे में 3-4 किलो नमक डालकर गाड़ देते हैं।

— यदि मृतक तीन वर्ष से कम उम्र का बालक है, तो उसे सफेद वस्त्र में लपेट कर और यदि कन्या हो तो उसे लाल वस्त्र में लपेट कर शमशान ले जाते हैं। गड्ढा खोदकर लगभग पांच किलो नमक

डाल कर उसे लिटा देते हैं। लाश के ऊपर भी कुछ नमक डालते हैं। लिटाकर ऊपर से पत्थर रख देते हैं, ताकि कोई जानवर उसे खोद कर न निकाल सके।

– किशोर बालक के मरने पर पिण्डदान व अन्य सभी कार्य करने चाहिये। केवल मृतक के पिता के जीवित रहने पर सपिंडन नहीं होता।

पिण्ड दान

बाजार से आये जौ के आटे को थाली में रखकर उसमें काले तिल, दूध, घी, शक्कर, शहद, दही, मिलाकर पानी से गूँध कर उसके पाँच पिण्ड बना लिये जायें। पिण्ड फल के जितना बड़ा होना चाहिए। किसी पंडित द्वारा संकल्प मंत्र के साथ पिण्ड-दान करें। क्रिया करने वाला दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बायाँ घुटना टेककर बैठ जाये और जनेऊ दाहिने कंधे पर रखकर (अर्थात् अपसव्य होकर) हाथ में कुछ पैसे, कुछ तिल, व जल लेकर पहले संकल्प करे।

पुत्र तथा निकट सम्बन्धी, जो कंधा देने वाले हों, अर्थी को उठाकर आँगन में रखें और सब लोग अर्थी की परिक्रमा करें। अब मृतक को अर्थी पर कफन ओढ़ाकर बान में कलावा मिलाकर उससे कसकर बाँधा जाये, फूलमाला व पान से सजाया जाये। वृद्ध मृतक के कान में नाती शंखनाद करते हैं, ऐसी हम हिन्दुओं में प्रथा है। इसका अर्थ यह है कि यदि संयोगवश शरीर के किसी अंग में प्राणवायु स्थिर रह गई है, तो वह कान में शंख की आवाज पहुँचने पर निकल जाये।

पैर पूजना

अर्थी पर मृतक को बाँधने के बाद तथा दो पिण्ड हो जाने के बाद बेटा, पोता, नाती, भांजे आदि पैर छूते हैं। पैर पूजन में मृतक पुरुष की स्त्री सबसे पहले लाल रंग के कपड़े के टुकड़ों के साथ रुपये-पैसे रखकर पैर पूजती है। मृतक की स्त्री की चूड़ियाँ व उसके बिछिये अर्थी में रख दिये जाते हैं। फिर घर की सब बहुएँ रुपये-पैसे व नारियल से पैर पूजती हैं। घर की अन्य बहुएँ, बेटे व अन्य लोग भी पैर पूजकर मृतक के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं। मृतक स्त्री के पैर कपड़े व गोले से पूजे जाते हैं। पैर पूजकर उल्टी परिक्रमा करते हैं (अर्थात् दाहिने से बायीं ओर)। वृद्ध मृतक के ऊपर पोते चंवर हिलाकर उसकी वायु से मक्खी-मच्छर आदि जीवों को हटा कर अपना सेवा-भाव दर्शाते हैं। मरने वाले के कपड़े क्रिया करने वाला या मृतक की विधवा स्त्री घर के दरवाजे के बाहर रख दे। भगवान का स्मरण कर मृतक की अर्थी को कंधा देने वाले पुनः उठाकर घर से बाहर ले जावें। यदि मृतक वृद्ध हो, तो चाँदी-सोने के फूल व मखाने तथा रेजगारी अर्थी के ऊपर से बिखेरते हैं। राह में पीपल के पेड़ के नीचे अर्थी रखकर विश्राम कराते हैं और निम्न मंत्र द्वारा तीसरा पिंड दें :-

अमुक गोत्रे अमुक प्रेत पथ निमित्तक विश्राम स्थाने एष पिंडों मयादीयते तवोप्रतिष्ठताम्।

एक घड़े में जल भरकर जल की एक धार छोड़ते हुए क्रिया करने वाला अर्थी की उल्टी एक परिक्रमा करे व घड़े को पैरों की तरफ ले जाकर फोड़ दें। इसके बाद शव की अर्थी को घर के वे ही चार लोग उठावेंगे जिन्होंने घर पर अर्थी को सर्वप्रथम कन्धा दिया था। केवल कंधा देने वाले आपस में बदल जाते हैं अर्थात् पीछे वाले आगे तथा आगे वाले पीछे जाकर अर्थी उठाते हैं। आजकल प्रायः अर्थी लाश ढोने वाली गाड़ी में शमशान घाट ले जाते हैं। यह ध्यान रखें कि इस समय सिरहाना आगे की ओर और पैर पीछे की ओर हों। शमशान घाट पर

पहुँचने पर अर्थी को जमीन पर स्वच्छ स्थान पर रख दें और एक बार पुनः नदी के जल से स्नान करावें या यदि नदी आदि न हो तो गंगा जल के छींटे दें। लकड़ी से चिता बनावें। भगवान का स्मरण कर अर्थी के बंधन खोलकर मृतक को ऊपर नीचे वाले कपड़े समेत ही चिता पर लिटा दें। चिता पर मृतक को रखने के बाद सर्वप्रथम क्रिया करने वाला लकड़ी रखता है फिर अन्य लोग शव की चिता पर लकड़ी रखते हैं। चिता पर फिर अंतिम दो पिंड (दायें व बायें हाथ के पास) दिये जाते हैं।

यदि मृत्यु के समय पंचक हों, तो कुशा के पांच पुतले बनाकर मृतक के पास चिता में रख दिये जाते हैं। मृतक के शरीर के ऊपर घी में भिगोकर चन्दन के टुकड़े रखे जाते हैं। यदि तुलसी की सूखी लकड़ी हो, तो उसे भी रख दें। कपूर, धूप आदि भी रखते हैं, पाँचों पिंड इकट्ठे करके शव के दक्षिण कोख में रख देते हैं। क्रिया करने वाला फूस में कपूर रखकर उसे जला कर फूस को हाथ में लिये हुये चिता की उल्टी परिक्रमा करे जिससे कि परिक्रमा के समय शव के व दाग देने वाले के बीच में बायाँ हाथ रहे। फिर जलते कपूर द्वारा फूस सहित सर्वप्रथम मृतक के सिर की ओर से अग्नि दे। महाब्राह्मण यहाँ का सारा कार्य कराता है। चिता की अग्नि को अच्छी तरह प्रज्वलित करने के लिए राल, शक्कर व घी डालते हैं। हवन सामग्री भी डाली जाती है, जिससे वातावरण शुद्ध हो जाये। जब महाब्राह्मण बतावे कि कपाल क्रिया के लिए मष्तिष्क पक गया है, तो एक बाँस को घी में भिगोकर उससे कपाल क्रिया की जाती है। घी की पाँच आहुतियाँ दी जाती हैं। शव की परिक्रमा करके महाब्राह्मण को सामर्थ्य अनुसार दक्षिणा दें। फूस आदि के पैसे भी दे दें। लाश जल जाने के बाद घर लौटना चाहिए। यदि इसी समय उठावनी का दिन व समय निश्चित कर लें तो अच्छा होगा। इससे सभी उपस्थित सज्जनों को इसकी सूचना उसी समय हो जाती है और अन्य लोगों तक भी उसकी सूचना उनके द्वारा हो जाती है।

उठावनी प्रायः तीसरे दिन होती है पर उस दिन मंगलवार या वृहस्पतिवार न पड़े।

क्रियाकर्म करके लौटते वक्त

- रास्ते में नहाने का प्रबन्ध हो तो नहाकर या हाथ-पैर धोकर सभी कुटुम्बीजन तिल की अँजली देते हैं।
- बायें हाथ की छोटी उँगली से नीम की पत्ती को चखकर थूक देते हैं।
- घर लौटकर आने तक घर की स्त्रियाँ नहाकर तिल की अँजली देती हैं, नीम की पत्ती चबाती हैं और फिर घर के आँगन में कुछ बिछाकर बैठी रहती हैं।
- भुने चने घर वाले खाते हैं।
- खाने का सामान आटा, दाल (उड़द की छिलके वाली), घी, नमक, मिर्च, दियासलाई, पत्तल, कुल्हड़ आदि सामान उतना ही लाया जाता है जो उस समय के लिए पर्याप्त हो। चौके में बने खाने में हल्दी नहीं पड़ती और न ही छौंक लगाया जाता है कढ़ाई भी नहीं चढ़ती। बचा खाना प्रयोग न करें। इस सब सामान की कीमत मृतक के ससुराल वाले या बेटे के ससुराल वाले देते हैं। जिस घर में मृत्यु हुई हो उस घर की बहुएं भोजन न बनायें। कोई आयी हुई बेटी या अन्य कोई

महिला बना दें। (**आजकल खाना हलवाई से आ जाता है जिसके पैसे मृतक के ससुराल वाले या बेटे के ससुराल वाले देते हैं।**)

- खाना बनाने के बाद चूल्हे पर तवा उल्टा रख देते हैं। बर्तन दूसरे दिन ही साफ करते हैं। शाम को घर में खाना नहीं बनता, कहीं बाहर से मंगा लें।
- चार रोटी और दाल से गौ-ग्रास दिया जाता है। कंधा देने वाले रिश्तेदार पहला ग्रास बायें हाथ से मुँह में रखकर थूक देते हैं। यह **कड़ुआ ग्रास** कहलाता है। फिर सब घर वाले भोजन करते हैं।
- कड़ुआ ग्रास प्रथम दिन, उठावनी के दिन, नौनहाने के दिन व द्वादशे वाले दिन ही होता है।
- प्रतिदिन पहले गौ-ग्रास देकर ही खाना खाया जाता है।
- मृतक की पत्नी तथा क्रिया-कर्म करने वाले को 12-13 दिन तक संयम से रहना चाहिए। रोज स्नान कर, किसी को बिना छुए, तख्त या जमीन पर सोना चाहिए।

अस्थि संचय

दाह कर्म करने के बाद उठावनी वाले दिन (दाह-संस्कार के तीसरे दिन) प्रातःकाल परिवार के पुरुष शमशान में अस्थि संचय (संग्रह) के लिए जाते हैं। सामान शमशान घाट पर मिल जाता है। बाजार से दही, कच्चा दूध, गंगाजल, एक व्यक्ति का भोजन, खोये की सफेद बरफी 250 ग्राम ले जाते हैं।

अस्थि संचय सिर की अस्थि को उठाकर दूध व गंगाजल से एक तसले में धोकर सफेद कपड़े की छोटी थैली में रखते हैं। बड़ी थैली में पहले छोटी थैली को रखकर फिर अन्य अस्थियाँ धोकर, पोंछकर भरते हैं। बची भस्म भरकर नदी या जल में डाल देते हैं। अस्थियाँ घर नहीं लायी जातीं। मंदिर के सुरक्षित स्थान पर रख देते हैं। (**दिल्ली में अस्थियां रखने के लिये बगीची व निगम बोध घाट में स्थान है। यह बगीची मरघट वाले हनुमान मंदिर, जमुना बाजार पर स्थित है।**)

स्नान कर घर लौटें, गऊ ग्रास देने के बाद ही भोजन करें। तेरहवीं से पहले किसी भी दिन जाकर गंगाजी में उन अस्थियों का विसर्जन कर देना चाहिए।

घट बाँधना

किसी कुएँ के पास पीपल के पेड़ में एक हाँडी में जल, फूल व चन्दन डाल कर बाँध देते हैं। हाँडी में एक छेद किया होता है जिसमें सूत डाल देते हैं, जिससे हाँडी से पानी एक-एक बूँद टपकता है। एक दीपक भी जला दिया जाता है। इसे **'घट बाँधना'** कहते हैं। दसवें के रोज तक प्रतिदिन इस हाँडी में पानी भरा जाता है। घट को पानी से पुनः भर देते हैं। **दिल्ली में बगीची में भी घट बांधा जाता है।**

उठावनी

1. मृत्यु के बाद, तीसरे दिन शाम को चार बजे के लगभग नातेदार, बिरादरी व जान-पहचान वाले एकत्र होते हैं। भजन आदि करें और मृतक को श्रद्धांजलि दें। इसी दिन बाहर वालों को सूचना-पत्र (चिट्ठी) लिखते हैं, जिसमें मरने की सूचना व तेरहवीं की तिथि लिखी जाती है।

2. तीसरे दिन मंगल या बृहस्पतिवार होने पर उस दिन उठावनी नहीं की जाती है, एक दिन पहले कर लेते हैं।
3. एक लोटे में पानी भरकर नाई या कोई नौकर लाता है। सर्वप्रथम क्रिया करने वाला बायें हाथ की छोटी उंगली से जरा-सा पानी आँख में छुआता है और लोटे में पैसे डालता है। इसे **'आँख ठंडी करना'** कहते हैं। सभी निकट सम्बन्धी व घर की स्त्रियाँ भी आँख ठंडी करती हैं।
4. मृतक आत्मा की शान्ति-कामना करने सभी मंदिर में भगवान के दर्शन के लिए जाते हैं।
5. मंदिर से लौटते समय हरे पत्ते वाला साग खरीद कर रसोई में रख देते हैं। बाद में इसे गाय को खिला दिया जाता है।
6. उठावनी के बाद चौथे दिन से घर की रसोई में साग आदि बन सकता है। लेकिन छौंक नहीं लगता, न ही कढ़ाई चढ़ती है।
9. यदि गरुड़ पुराण या गीता का पाठ करना हो, तो इसी दिन से शुरू करते हैं। बारहवां या तेरहवीं पर उसकी समाप्ति होती है।

अस्थि विसर्जन

अस्थि का प्रायः गंगा जी में विसर्जन किया जाता है। पुत्र, निकट संबंधी गंगाजी जाकर अस्थि की थैली को गंगाजी की मध्य धारा में विसर्जन कर दें। यह कार्य उठावनी के बाद कर देना चाहिए। विसर्जन के बाद वहीं पर ब्राह्मण को भोजन कराकर उसको दक्षिणा देनी चाहिए।

नौनहाना

1. घर के पुरुष बाल बनवाकर नहाते हैं।
2. नीम की पत्ती चबाकर घर वापस लौटते हैं।
3. नौनहाने के दिन या उससे पहले प्रातःकाल घर की बहन-बेटियाँ **'आँट मीट'** खोलती हैं। सिर से नहाकर शृंगार (काजल, बिन्दी, माँग भरना आदि) करती हैं व मंदिर जा कर कुछ खाकर वापस आती हैं।
4. इस दिन दाल चावल बनते हैं तथा चावल की आँट खुल जाती है।

दसवां या ग्यारहवां

— कुछ लोग दसवें दिन यह कार्य करते हैं और कुछ ग्यारहवें दिन। **(आजकल नौनहाने वाले दिन ही यह कार्य हो जाता है।)**

— महाब्राह्मण द्वारा सपिंडी का कार्य करवाया जाता है।

दसवें पर दान का सामान

— ज्यादातर पुराना सामान लेकिन अच्छी अवस्था वाला—चारपाई, दरी या गद्दा, चादर, तकिया, ओढ़ने की चादर या रजाई (पुरानी या नई)।

- थाली, लोटा, गिलास, कटोरी, चम्मच।
- छतरी, लकड़ी की छड़ी, चप्पल या खड़ाऊँ, लैम्प (टार्च)।
- शीशा, कंघा, चन्दन माला, आसन, तेल।
- अन्न और गऊ दान के निमित्त कुछ धन।
- यदि मृतक स्त्री हो तो 'सुहाग पिटारी' इसमें चूड़ी, मेंहदी, बिन्दी, बिछिया, कलावा होता है।
- कुछ फल मिठाई महाब्राह्मण को सामर्थ्यानुसार दक्षिणा के साथ दे दें।
- **दिल्ली में नौनहाना व दसवां बगीची में भी होता है। महाब्राह्मण पुराना सामान लेने से कतराता है। इसलिये बहुत से लोग नया सामान ही देते हैं।**

पूजन के लिए सामान

जौ का आटा ढाई किलो, ढाक के पत्ते, दोने, दूध, दही, शहद, गंगाजल, रूई जिसमें 360 बत्ती बने, कड़वा तेल और पान। (**यह सामान बगीची में ही मिल जाता है।**)

बारहवां या तेरहवीं

- पुरुष की तेरहवीं कुछ लोग बारह दिन की करते हैं और कुछ तेरहवें दिन।
- स्त्री की तेरहवीं बारह दिन की होनी चाहिये।
- गरुड़ पुराण या गीता का पाठ इसी दिन समाप्त कर देना चाहिये।
- इस दिन प्रातः पंडित द्वारा सपिंडी-कृत कर्म कराया जाता है। (कार्य के लिए सामान पंडित से पूछकर ही मंगवाया जाता है)।
- प्रातः हवन कर शुद्धि की जाती है।
- इसी दिन षोडशी श्राद्ध भी कर देना चाहिए क्योंकि हर माह के श्राद्ध करने की सुविधा न रही, तो दिक्कत होती है।
- 12 ब्राह्मणों को भोजन कराया जाये।
- भोजन में हल्दी नहीं डाली जाती है। बेसन की बनी कोई भी वस्तु पंडितों को नहीं परोसी जाती है।
- ब्राह्मणों द्वारा भोजन के बाद ही घर वाले भोजन करते हैं।
- यदि मृतक स्त्री है, तो 12 ब्राह्मणों के अतिरिक्त 9 ब्राह्मणियों को भोजन करायें। यदि मृतक स्त्री हो तो इसमें से एक ब्राह्मणी को शय्यादान का सारा समान दिया जायेगा। वही ब्राह्मणी हर माह श्राद्ध पर भोजन करने आये व बरसी पर भी दान का समान इसी ब्राह्मणी को दिया जायेगा व भोजन कराया जायेगा।
- अपने निकट संबन्धियों, निकट परिजन आदि को तेरहवीं के दिन बुलाना चाहिए। सभी उपस्थित व्यक्ति व संबन्धी प्रसादस्वरूप भोजन पाते हैं।

बारह ब्राह्मणों के लिए

12 गिलास, 12 सफेद रूमाल, 12 फल, 12 पेड़े, 12 सुपारी, 12 कमलगट्टा, दक्षिणा श्रद्धा अनुसार। **(ब्राह्मण कई बार बाहर निकलते ही हाँडी फेंक देते हैं इसलिए हाँडी की जगह गिलास देने को लिखा है।)**

शय्यादान के लिए सामान

इसके बाद शय्यादान। इसमें सब सामान नया दिया जाता है।

1. पलंग, रजाई, गद्दा, चादर, तकिया।
2. थाली, लोटा, गिलास, कटोरी, चम्मच, बाल्टी।
3. छतरी, छड़ी, जनेऊ, चप्पल या खड़ाऊँ, टार्च।
4. शीशा, कंघा, तेल, माला, चंदन।
5. आसन कुशा का, रामायण या गीता।
6. पाँच कपड़े।
7. खाना, मिठाई।
8. अन्नदान, गऊदान (जितनी इच्छा हो)।
9. अगर मृतक सुहागिन स्त्री है, तो सुहाग पिटारी जिसमें चूड़ी, बिन्दी, मेंहदी, बिछिया, कलावा तथा लौंग या नथ।

जो पंडित सब कार्य कराये उसे ही यह दान देना चाहिए।

भले-बुरे की रस्म

यदि मृतक की स्त्री जीवित है, तो शय्यादान के बाद नहा ले। पीहर की तरफ से आयी दो धोती, दो ब्लाउज आदि सिर पर ओढ़ाये और **'आगे'** के रुपये दे। इसे **भले-बुरे की रस्म** कहते हैं। बेटों के ससुराल वाले और अन्य सम्बन्धी भी 'आगे' के रुपये देते हैं। बेटों के ससुराल से स्त्री के कपड़े व क्रिया करने वाले को जोड़ा दिया जाता है। घर के लोग कड़ुआ ग्रास करके भोजन करते हैं।

पगड़ी बाँधना

क्रिया करने वाले की हजामत (शेव) कराके उसे नये वस्त्र पहनाये जाते हैं। चौक पूरकर उसे एक पट्टे पर बैठाते हैं। एक घड़ा या कलश पानी भरकर (जेघड़) रखा जाये और अगर मृतक पुरुष हो तो पुरुष के पाँच कपड़े और यदि मृतक स्त्री है तो स्त्री के पाँच कपड़े, कुछ रुपये और पत्तल में लड्डू रखकर संकल्प किया जाता है। यह सामान सवासनी को दिया जाता है।

इसके बाद क्रिया करने वाले के पगड़ी बाँधी जाती है। सबसे पहले बहन या बुआ के यहाँ से आई पगड़ी पहनाई जाती है। फिर ससुराल से आया जोड़ा व तिलक दिया जाये फिर नाना-मामा के यहाँ से आया जोड़ा व

पगड़ी दी जाये। सबसे पहले बहन व बुआ तिलक करती हैं, फिर सब नातेदार। तिलक में दिये जाने वाले रुपये दस, बीस या पचास हो सकते हैं, पर ग्यारह, इक्कीस व इक्यावन नहीं। औरत के मरने पर केवल बुआ ही तिलक करती है बाकी सम्बन्धी नहीं। सभी उपस्थित जन मंदिर जाकर भगवान के दर्शन करते हैं। लौटते वक्त हरी तरकारी या पालक लाते हैं।

स्त्री द्वारा आँट खोलना

बहुएँ सिर धोकर सिंदूर, बिन्दी, काजल लगाती हैं, गोटा लगा कोई कपड़ा पहन लेती हैं। कुटुम्ब की सभी स्त्रियाँ सम्मिलित होकर हरी तरकारी-साग छोंक कर बहुएँ 4-4 पराठे बनाती हैं। आज से तवे पर पराठे सेंकने की आँट खुल जाती है।

सब कार्य हो जाने के बाद मृतक की स्त्री गंगा-स्नान को जाती है। बुरे-भले की जो धोती पीहर से आई थी, उसी को पहनकर स्त्री जाती है; वह धोती नहाकर वहीं छोड़ आती है। पीहर से आई हुई दूसरी धोती, ब्लाउज आदि पहनकर लौटती है। घर आकर आँट खोलने की रस्म की जाती है।

पहले मासिक श्राद्ध के बाद, मृतक की पत्नी पीहर एक थैली में लड्डू रखकर ले जाती है। वहाँ पर रुककर पुनः अपने घर लौट आती है। पीहर वाले 1 थैली में लड्डू भरकर, 2 धोती, ब्लाउज, हाथ की चूड़ी (सोने या चाँदी की) देते हैं। घर लौटकर कोथली खोलकर 2-4 घरों में लड्डू बाँट दिये जाते हैं। इसके बाद ही परिवार में कोई शुभ कार्य हो सकता है।

साल भर तक मृतक के निम्न सोलह श्राद्ध किये जाते हैं—(1) पन्द्रह दिन का (2) एक महीने का (3) डेढ़ महीने का (4) दो महीने का (5) ढाई महीने का (6) तीन महीने का (7) चार महीने का (8) पांच महीने का (9) छह महीने का (10) सात महीने का (11) आठ महीने का (12) नौ महीने का (13) दस महीने का (14) ग्यारह महीने का (15) साढ़े ग्यारह महीने का (16) बारह महीने का। (**आजकल पन्द्रह दिन के श्राद्ध पर सूखा सीधा दिया जाता है, इसके बाद हर महीने ब्राह्मण जिमाते हैं। डेढ़ महीना, ढाई महीना व साढ़े ग्यारह महीने वाला श्राद्ध आजकल लोग नहीं करते**)। श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन के बाद दक्षिणा देना आवश्यक है। श्राद्ध के दिन भूखे आगन्तुक को भोजन अवश्य देना चाहिए, लौटाना नहीं चाहिए। भोजन कराते समय जाति-पाँति का विचार नहीं करना चाहिये, क्योंकि सभी प्राणियों में आत्मा है; हमें तो उसी की तृप्ति करनी है। इसका यह मतलब न निकालें कि ब्राह्मण की जगह शूद्र को श्राद्ध में निमंत्रित कर खिलाया जाये; पर यदि श्राद्ध के दिन भूखा शूद्र भी आ जाये, तो उसे भी भोजन कराना चाहिये।

बरसी

मृतक-पुरुष की बरसी साढ़े ग्यारह महीने पर की जाती है और स्त्री की ग्यारह महीने पर। कुछ पुरुष की बरसी बारह मास की व स्त्री की बरसी साढ़े ग्यारह मास की करते हैं। बरसी पर प्रातः हवन करके ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है।

बरसी पर सामान

पुरुष की बरसी हो, तो पहनने के पाँच कपड़े, ओढ़ने-बिछाने के लिए गद्दा, रजाई, चादर, चदरा, तकिया, गिलाफ, पलंग (खाट), खड़ाऊँ या जूता, छाता, छड़ी, मंजन, साबुन, अंगोछा, माला, तेल कंघा, शीशा, आदि बरसी कराने वाले पंडित या पुरोहित को शय्यादान में देना चाहिए। इसके अतिरिक्त थाली, लोटा, गिलास, कटोरी आदि पाँच बरतन भी दिये जाते हैं। अँगूठी या अन्य गहने भी हो सके, तो वह भी दें। सालभर के लिए खाने का अनाज, दाल, घी इत्यादि भी दिया जाता है या उसके निमित्त रुपये भी दिये जाते हैं। मृतक-स्त्री की बरसी पर स्त्री के वस्त्र व उपरोक्त अन्य सब सामान होता है। जिस ब्राह्मणी ने श्राद्ध में खाना खाया हो उसी को शैय्यादान का सारा सामान दिया जाता है। कम से कम बारह ब्राह्मणों को भोजन करावें, ब्राह्मणों को दक्षिणा भी दी जाती है। अपने रिश्तेदारों व अन्य व्यक्तियों को भी प्रसादस्वरूप भोजन पाने के लिए बुलाते हैं। प्रत्येक वर्ष मृतक की तिथि पर तथा कनागत में उसी तिथि को श्राद्ध व ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है। गया जी या बद्रीनाथ जी में श्राद्ध व पिण्डदान कर देने के बाद हर वर्ष तिथि पर व कनागत में श्राद्ध करना आवश्यक नहीं होता। (**लोकप्रथा है कि मृतक का गया में श्राद्ध कर देने के बाद पितरों की मुक्ति हो जाती है और इसके बाद श्राद्ध नहीं करने चाहिए। ऐसा कहा जाता है, पर यदि कोई पुत्र फिर भी श्राद्ध करे, तो उसका फल श्राद्धकर्ता को धर्मरूप में मिलेगा।**)

— ●●● —

संत चरणदास की 108 नाम की माला

कहा कहि तोहे पुकारुँ, हे करतार हमारे।।
नाम अनन्त अन्त नहिं जाको बहुगुण रूप तिहारे।।
अजर अमर अविगत अविनाशी अलख निरंजन स्वामी।।
पुरुष-पुरातन पुरुषोत्तम प्रभु पूरण-अन्तरयामी।।
कृष्ण कन्हैया विष्णु नारायण-ज्योति रूप विधाता।।
अपरम्पार मुकुंद मुरारी दीनबन्धु ब्रजनाथा।।
यादवपति जगदीश चतुर्भुज निर्भय सर्वप्रकाशी।।
पारब्रह्म प्राणन को दाता सब ठाँ घट-घट वासी।।
निरविकार परमेश्वर गिरिधर माधव गोविन्द प्यारा।।
कमलनैन केशव मधुसूदन सबमें सब से न्यारा।।
हृषिकेश मुरलीधर मोहन ॐ अखिल अयोनी।।
भगवत वासुदेव भगवाना ज्ञानी ध्यानी मोनी।।
दीनानाथ गोपाल हरि हर गरुड़ध्वज घनश्यामा।।
भक्ति बछल अरु देवकी नन्दन करता सब विधि कामा।।
आदिप्रधान माधुरी मूरति धरणीधर बलबीरा।।
नन्दनन्दन अरु यसुदाननदन सुन्दर श्याम शरीरा।।
परशुराम नरसिंह विश्वंभर अचल अखंड अरूपी।।
ईश आगोचर और जगतगुरु परमानन्द बहुरूपी।।
करुणामय कल्याण अनन्ता दयासिन्धु बनवारी।।
धारण शंख चक्र रुक्मिणीपति आनन्दकंद बिहारी।।
परमदयाल मनोहर नरहरि कृपानिद्धि फलदाता।।
कंसनिकन्दन रावणगंजन जगपति लक्ष्मीनाथा।।
जगन्नाथ अरु बद्रीनाथा निर्गुण सर्वगुण धारी।।
दामोदर रघुवर सीतापति रामा कुंज बिहारी।।
दुष्टदलन सन्तन को रक्षक सकल सृष्टि को सांई।।
दुःख हरण के कौतुक अनगिन शेष पार नहिं पाई।।
सौ अरु आठ नाम की माला जो नर मुख उच्चारै।।
अपने कुल की सारी पीढ़ी एक अरु सौ को तारे।।
गुरु शुकदेव मंत्र निज दीन्हो राम नाम ततसारा।।
चरणदास निश्चय सो जप करि उतरौ भव जल पारा।।

गोत्र - गोलज्ञ, कुल देवी - शकरा

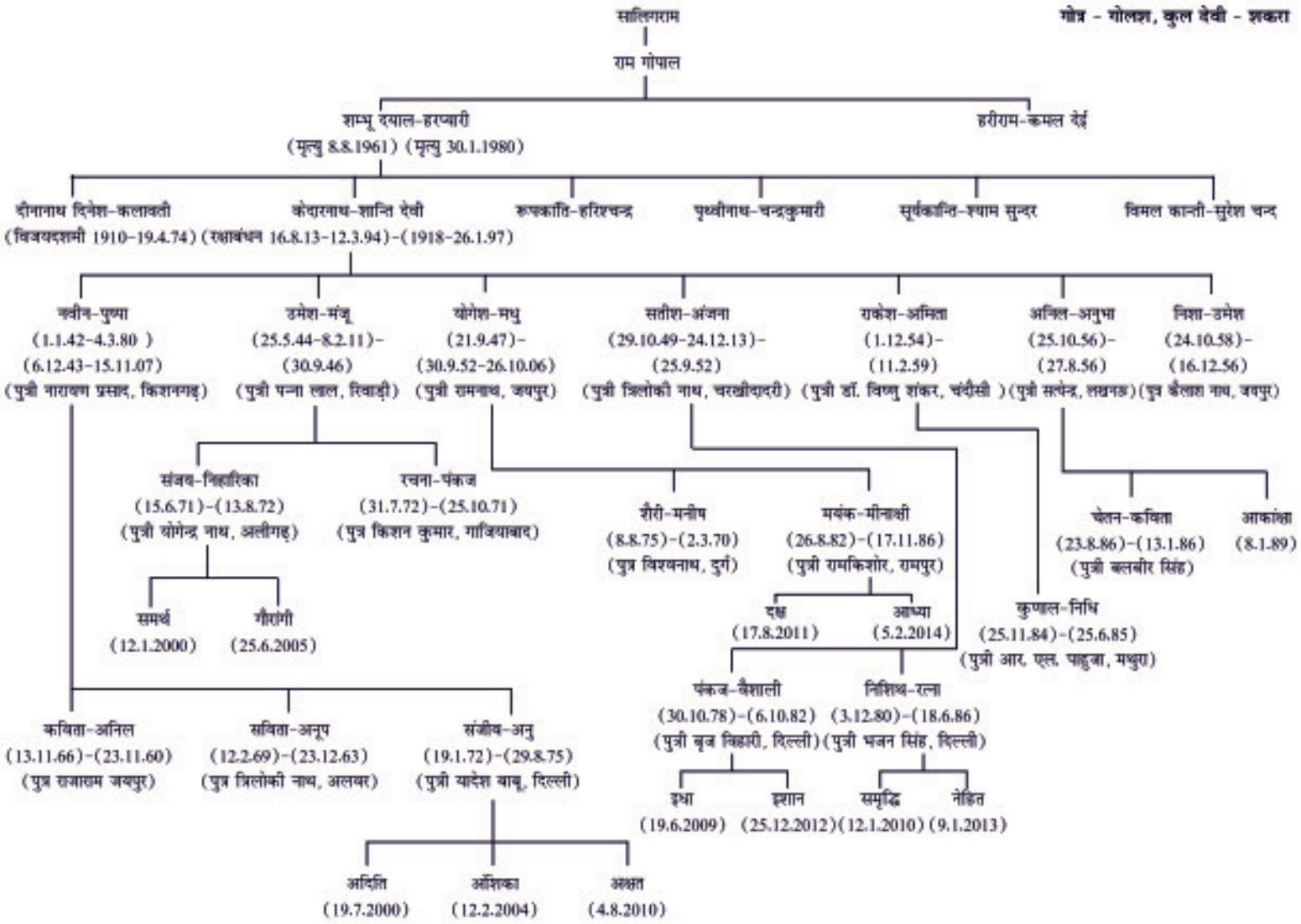

लेखक परिचय :

योगेश भार्गव

योगेश भार्गव का जन्म 21 सितम्बर, 1947 को पं. केदारनाथ भार्गव एवं श्रीमती शांति देवी भार्गव दिल्ली निवासी के यहाँ हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा दिल्ली व आगरा में हुई। नार्दन रीजनल इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रिंटिंग टैक्नोलोजी इलाहाबाद से प्रिंटिंग का डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात् प्रिंटिंग प्रैसों में रचनात्मक कार्य किया। उसके पश्चात् अपने पिताजी के प्रैस जमना प्रिंटिंग वर्क्स में कार्यरत रहते हुये उसे नई ऊँचाईयों पर पहुँचाया। विरासत में मिली सामाजिक सेवा में तत्पर रहते हुए दिल्ली भार्गव सभा शताब्दी वर्ष 2000 की स्मारिका का पूर्ण दायित्व था।

आप अखिल भारतीय भार्गव युवा संघ के कोषाध्यक्ष व उप-प्रधान रहने के पश्चात् सन् 1975, 1978 व 1984 में अध्यक्ष रह चुके हैं। दिल्ली भार्गव युवा संघ के संस्थापक रहने के साथ साथ उसके प्रधान पद को सुशोभित कर चुके हैं। दिल्ली भार्गव सभा के मुख्य सचिव 1997-98 में रह चुके हैं। 2009-2013 (चार वर्ष) दिल्ली भार्गव सभा के प्रधान रह चुके हैं। दिल्ली से प्रकाशित 'भार्गव समाचार दर्शिका' के सम्पादक होने के साथ साथ स्वभाव से नम्र, हँसमुख व मिलनसार हैं।

आपका विवाह श्रीमती विमला भार्गव एवं श्री रामनाथ भार्गव (जयपुर निवासी) की सुपुत्री सौ. मधु से 30 जनवरी, 1974 को सम्पन्न हुआ। आपके एक पुत्री शैरी भार्गव एवं एक पुत्र मयंक भार्गव हैं। आपकी पुत्री शैरी का विवाह श्रीमती मालती भार्गव एवं श्री विश्वनाथ भार्गव (भिलाई निवासी) के सुपुत्र श्री मनीष के साथ सम्पन्न हुआ। शैरी व मनीष भार्गव के एक पुत्र वत्सल हैं। सुपुत्र श्री मयंक का विवाह श्रीमती कनकलता भार्गव एवं श्री रामकिशोर भार्गव (रामपुर निवासी) की सुपुत्री सौ. मीनाक्षी के साथ सम्पन्न हुआ। मयंक व मीनाक्षी भार्गव के एक पुत्र दक्ष व एक पुत्री आद्या हैं।

आप के.के. कोआपरेटिव ग्रुप हाउसिंग सोसाईटी के संस्थापक प्रधान रह चुके हैं। भार्गव पत्रिका की सलाहकार समिति के सदस्य रह चुके हैं तथा अखिल भारतीय भार्गव सभा के उप-प्रधान रह चुके हैं। कई वर्ष तक अखिल भारतीय भार्गव सभा की खेलकूद उपसमिति के सदस्य रहे तथा लखनऊ भार्गव सभा के भी मंत्री रह चुके हैं। आजकल आप अपना निजी प्रिंटिंग प्रैस भृगु प्रिंटर्स व मीनाक्षी कॉम्प.स्टेशनर्स चला रहे हैं।

अपना कर्तव्य पूर्ण करते ही हृदय में शांति का सागर हिलोरें लेने लगता है, जो कर्तव्य किये बिना शान्ति चाहते हैं उन्हें दु:खी और दीन होकर रहना पड़ता है।

-दीनानाथ भार्गव 'दिनेश'